RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

# संघशक्ति

## मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 60 अंक : 02 प्रकाशन तिथि : 25 जनवरी कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 फरवरी, 2023

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

श्री क्षात्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक श्री वीरम सिंह थोब एडवोकेट को अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस कमेटी पचपदरा, सदस्य बीसूका बाड़मेर एवं अध्यक्ष ग्राम सेवा सहकारी समिति थोब के निर्वाचित/मनोनीत होने एवं स्वयसेवक श्री नरेंद्र सिंह रेवाड़ा को शारिरिक शिक्षक बनने पर हार्दिक शुभकामनाएं एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकानाए

श्री वीरम सिंह थोब एडवोकेट

स्वयसेवक श्री नरेंद्र सिंह रेवाड़ा

शुभेच्छु

दौलत सिंह मुंगेरिया, प्रेम सिंह परेउ, वागसिंह लोहिड़ी
सोमसिंह लोहिड़ी, राणसिंह टापरा, छतरसिंह गोल सोढा
बलवत सिंह कोटड़ी, जीवराज सिंह ढाखा, चंदन सिंह थोब
जैतमाल सिंह बिशाला, सुमेर सिंह कालेवा, करण सिंह दूधावा,
पदम सिंह भाऊडा, मूल सिंह चांदेसरा, पदम् सिंह कंवरली,
महेंद्र सिंह रेवाड़ा जैतमाल, परमवीर सिंह ढेलाणा
सुरेंद्र सिंह गुगड़ी, परबतसिंह जाजवा
एडवोकेट गणपत सिंह गोलिया

# संघशक्ति

4 फरवरी, 2023

वर्ष : 59 अंक : 02

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये


## विषय – सूची


| | | |
|---|---|---|
| ☞ समाचार संक्षेप | ✍ | 04 |
| ☞ चलता रहे मेरा संघ | ✍ श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर | 05 |
| ☞ पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में) | ✍ चैनसिंह बैठवास | 07 |
| ☞ तनसिंघ जी | ✍ संतोष बरड़वा | 10 |
| ☞ पृथ्वीराज चौहान | ✍ विरेन्द्रसिंह मांडण | 11 |
| ☞ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा | ✍ भँवरसिंह मांडासी | 13 |
| ☞ मर्यादा के दृष्टिकोण से भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण | ✍ स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी संकलन : डॉ. भंवरसिंह भगवानपुरा | 17 |
| ☞ हमारे प्यारे बाबोसा | ✍ श्रीमती क्षिप्रा लूंछ | 20 |
| ☞ दत्तानी युद्ध में पराजित हुई थी, मुगल सेना | ✍ डॉ. उदयसिंह डिगार | 22 |
| ☞ मृत्युभोज | ✍ भागीरथसिंह लूणोत | 23 |
| ☞ विचार सरिता (अष्टसप्तति लहरी) | ✍ विचारक | 25 |
| ☞ कहानी एक क्षत्राणी के सुहाग की | ✍ सुरेन्द्रसिंह महलाना उतरादा | 27 |
| ☞ बीते तीन साल बहुत कुछ समझा गये | ✍ गोवर्धनदास (बिन्नाणी) | 31 |
| ☞ रजपूती जिन्दगी | ✍ गुमानसिंह धमोरा | 33 |
| ☞ अपनी बात | ✍ | 36 |

# समाचार संक्षेप

## संघ स्थापना दिवस :

श्री क्षत्रिय युवक संघ ने अपनी यात्रा के 76 वर्ष पूर्ण कर 22 दिसम्बर, 2022 को 77वें वर्ष में प्रवेश किया। इस अवसर पर लगभग 180 स्थानों पर स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित हुए। 8 दिसम्बर को भूंगरा में हुई हृदय विदारक घटना के कारण राजस्थान में सम्पन्न सभी कार्यक्रम इस घटना में दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि कार्यक्रमों के रूप में मनाये गए। राजस्थान के बाहर प्रतिवर्ष की तरह हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए, वहाँ भी उन दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गई।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में स्थापना दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए संघ संरक्षक माननीय भगवानसिंहजी ने बताया कि भगवान ने हमको क्षत्रिय के घर में जन्म दिया है तो हमारा कर्तव्य भी निश्चित कर दिया। रक्त के गुणों के आधार पर हमारा कर्म निश्चित होता है। क्षत्रिय रक्त होने से क्षात्रधर्म हमारा स्वभाव है, स्व कर्तव्य है, उसका पालन करना है। हमारे अन्दर सोई रजपूती को बाहर प्रकट करना होगा और यह नियमित रूप से निरन्तर अभ्यास करने से ही संभव है। संघ हमारे सोये स्वभाव को जीवन में प्रकट करने का शिक्षण देता है और ऐसा शिक्षण अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। संघ निज को बनाने पर जोर देता है क्योंकि उसके बिना जगत नहीं बनता। संघ समाज को माँ का रूप मानता है और माँ की सेवा का ही यह कार्य है। पू. तनसिंहजी ने अकेले यह विचार किया और जीवन भर यही करते रहे तो धीरे-धीरे एक से अनेक और अनेकता में एकता का रूप निखरने लगा। संरक्षकश्री ने अब संघ के विस्तार योजना की आवश्यकता जताई और सभी का संघ से जुड़ने का आह्वान किया।

उत्तरप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में महोबा में आयोजित स्थापना दिवस को संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंहजी ने सम्बोधित किया। क्षत्रिय, युवक तथा संघ, इन तीनों शब्दों का अर्थ विस्तार से समझाते हुए क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया। संघ ऐसे युवाओं को प्रशिक्षण का कार्य कर रहा है जो पूर्वजों के त्याग और बलिदान के मार्ग पर चल सकें। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग साधना का मार्ग है। व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि की ओर ले जाने वाला मार्ग है संघ। कार्यक्रम में महिलाओं की बड़ी उपस्थिति रही। बालिका संस्कार निर्माण की बात भी बताई गई।

गुजरात के राजकोट जिले के जामकंडोरना में आयोजित समारोह में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ की विचारधारा को समझाया गया। बड़ी संख्य में पुरुष व महिलाएँ कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। महाराष्ट्र में मुंबई तथा पुणे में भी स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न हुए। कार्यकर्ताओं का उत्साह दोनों ही जगह बड़ी संख्या में समाज की महिलाओं तथा पुरुषों को खींच लाया। हैदराबाद में भी संघ स्थापना दिवस मनाया गया।

## अन्य कार्यक्रम :

क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के उत्तरदायित्व वहन करने वाले कार्यकर्ताओं का दो दिवसीय कार्यक्रम 7 व 8 दिसम्बर को संघशक्ति कार्यालय जयपुर में सम्पन्न हुआ। क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का स्थापना दिवस भी 12 जनवरी को अनेक स्थानों पर मनाया गया।

प्रताप युवा शक्ति के तत्वावधान में बालकों को सही विषय लेने सम्बन्धी निर्देशों के साथ प्रत्येक विषय में सम्भावनाओं सम्बन्धी जानकारी विषय के विशेषज्ञों ने 8 जनवरी को विस्तार से दी।

दिल्ली प्रवास में संरक्षक श्री ने समाज के सांसदों से भी मुलाकात कर समाज की स्थिति पर विचार-विमर्श किया। रक्षामंत्री राजनाथसिंह व कृषि मंत्री नरेन्द्रसिंह तोमर से भी समाज व राजनीति पर बात की। ●

# चलता रहे मेरा संघ

**{उच्च प्रशिक्षण शिविर, आलोक आश्रम बाड़मेर में 26 मई, 2022 को माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर द्वारा प्रदत्त प्रभात संदेश}**

भारतीय मनीषियों ने, सबसे पहले, अपने ज्ञान, ध्यान और तपस्या से जो खोज की, उससे उनके अनुभव में जो उतरा उनको वेद कहते हैं। उन्हीं वेदों का सूक्ष्म रूप उपनिषद है। यों तो अनेकों उपनिषद हैं लेकिन मुख्य ग्यारह उपनिषद हैं। उनमें सबसे पहला है ईशोपनिषद। बहुत छोटा है। हम जब कोई काम करते हैं तो सबसे पहले गणेश जी की पूजा करते हैं, देवी-देवताओं की प्रार्थना करते हैं। ईशोपनिषद की प्रार्थना देवी-देवताओं की नहीं है। उसमें यह बताया है कि यह भी सत्य है, वह भी सत्य है। जो हमें दिखाई देता है उसको हम कहते हैं 'यह', जो दिखाई नहीं देता किन्तु उसका अस्तित्व स्वीकार करते हैं वह 'वह' कहलाता है। हम कह सकते हैं कि जो दिखाई देता है यह भगवान द्वारा सृष्ट प्रवृति और संसार है। इसको हम देख सकते हैं। इसको कहते हैं यह निस्सार है, लेकिन उपनिषद कहता है, यह भी सत्य है। और वह का मतलब परमपिता परमेश्वर। नास्तिक विचारधारा के अतिरिक्त दुनिया भर के लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि जो दिखाई नहीं देता वह भी सत्य है। वह पूर्ण है। पूर्ण में से पूर्ण को निकाल देने के बाद भी पूर्ण ही शेष बचता है। यह है ईशोपनिषद की प्रारम्भिक प्रार्थना। ईशोपनिषद में कुल अट्ठारह सूत्र हैं। पहला सूत्र है-

**ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।**
**तेन त्यक्तेन भुंजिथा: मा गृध: कस्यस्विद्धनम्।।**

बहुत गम्भीर, लेकिन सबसे पहले उस बात को कहा है जो परम सत्य है। उस परम सत्य को समझने के लिये फिर धीरे से हल्का स्तर बनाकर हमको समझाते हैं, वह दूसरा मंत्र है, फिर तीसरा है, चौथा है, ऐसा क्रम है। केवल भारतवर्ष ही नहीं, दुनिया के पूर्वी भाग में जो देश हैं उन सबने स्वीकार किया है इसको। पश्चिम वाले अब भी स्वीकार न करें, उनकी मर्जी है। इस उपनिषद का पहला शब्द है ईश। ईश का अर्थ है ईश्वर और इसी से ईशोपनिषद बना है। तो ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्-यत्किञ्च का मतलब जो कुछ भी इस संसार में है, वह ईश्वर द्वारा आच्छादित है, यह सत्य प्रकट किया है भारतवर्ष ने।

पू. तनसिंहजी अनेकों बौद्धिकों में इसका उदाहरण दिया करते थे। इसलिए हमारे लिये यह महत्त्वपूर्ण ही नहीं, पूज्य स्थान रखता है। ईशावस्यम् उसका वास है, इंद सर्वम ईश का वास है सबमें। तेन त्यक्तेन भुंजिथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम्-तेन का मतलब है उसको, जो ईश्वर का दिया हुआ है, ईश्वर द्वारा आच्छादित है, ईश्वर जिसमें समाहित है। प्रकृति की बात है, संसार की बात है। तो इस संसार में जो कुछ भी है-तेन त्यक्तेन-उसको अपना मत समझो, यह भगवान का है-तेन त्यक्तेन-इसलिए उसका त्याग कर दो। यह अपने लिए नहीं है लेकिन सदुपयोग की मना नहीं है। लेकिन ज्यों ही हमने उसको अपना माना, ममत्व सिद्ध किया, संसार की किसी भी वस्तु में, वहीं से हमारी आध्यात्मिक यात्रा अवरुद्ध हो जाती है। हो सकता है कोई उच्च पदाधिकारी बन जाए, बड़ा राजनेता बन जाए लेकिन उसकी आध्यात्मिक यात्रा यहीं समाप्त हो जाती है। जो भगवान की दी हुई वस्तु पर लालसा रखता है, आँखें गड़ाए रहता है, उसकी आध्यात्मिक यात्रा अवरुद्ध हो जाती है।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा, भुंजीथा का अर्थ है भोग,

लेकिन यहाँ इसका सही अर्थ व्याख्याकारों ने, उपनिषद के टीकाकारों ने बताया है कि भोग नहीं है, उपभोग नहीं है, सदुपयोग है। जो कुछ भगवान ने दिया है उसका सदुपयोग हो। भगवान ने पति को पत्नी दी है, वह उपभोग के लिये नहीं है, संसार चक्र को चलाने के लिये, संतान उत्पन्न करने के लिये है, इससे अधिक यदि भोग में हम लग जाते हैं तो यात्रा रुक गई। ब्रह्मचर्य खंडित हुआ और यात्रा रुकी। जो कुछ भी मिला है, चाहे आप सत्ता में आए हैं, पर यह भगवान की माया है। उस माया पर ज्यों ही अधिकार जमाने की कोशिश की, वहीं अहंकार उत्पन्न होगा। अहंकार से मद पैदा होगा, जहाँ मद है वहाँ क्रोध आ जाएगा। विकारों का जो परिवार है वह दौड़ा आएगा।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा–सदुपयोग करें, सब कुछ सदुपयोग के लिए है। जैसे जिस मकान में हम रहते हैं, वह हमारा नहीं है, भगवान ने हमको सुविधा प्रदान की है। पत्नी मिली है, वह आपकी नहीं, भगवान की आपको दी हुई है। आपको बंगला मिला है, कार मिली है, सत्ता मिली है, वह सब भगवान का है। शासक यदि ऐसे बन जाएँ, ऐसे क्षत्रिय बन जाएँ, वणिक लोग ऐसे बन जाएँ, ब्राह्मण ऐसे बन जाएँ, ऐसे ही जिनको शूद्र कहा जाता है जो अक्षम हैं, अल्पज्ञ हैं वे बन जाएँ कि जो कुछ उनको मिला है, वह भगवान का दिया हुआ है तो यात्रा सुपथ गामी रहे। मा गृधः कस्यस्विद्धनम–मा का अर्थ है नहीं। गिद्ध मत बनो। गिद्ध कितना आकाश में उड़ता है पर कंकाल पर नजर रहती है। यह सब कंकाल की तरह ही है–खाया, पिया और खत्म, भोग किया और खतम। मा गृधः– गिद्ध मत बनो।

कस्य का मतलब है किसका? यह जो धन जिसको हम संपत्ति मानते हैं, पत्नी को संपत्ति मानते हैं, सत्ता को संपत्ति मानते हैं, पुत्र को संपत्ति मानते हैं, यह जो धन है वह किसका है? बस प्रश्न हमारे सामने छोड़ दिया, उत्तर पहले ही दे दिया–यह सब भगवान का है। यह एक महत्त्वपूर्ण मंत्र है जिसका हम प्रतिदिन उच्चारण करते हैं, उसका अर्थ समझ लें, बहुत अच्छा रहेगा। परमपिता परमेश्वर की ओर जाने के लिये यह सूत्र जीवन में बदलाव लाएगा और इसी शिविर से आपके जीवन में एक यात्रा प्रारम्भ होगी, एक हरकत होगी। जैसे तप से कुण्डलिनी का जागरण होता है तो अधिष्ठान और आगे के इसके पड़ावों से अंत में ब्रह्म रंध्र में पहुँचती है। तो यह सूत्र है, जीव और ब्रह्म का मेल कराने का सूत्र है। यह सारी यात्रा इस बात को ध्यान में रखकर हम करते हैं तो निश्चित रूप से जो क्षत्रिय युवक संघ का शाश्वत उद्देश्य बताया गया, ईश्वर को प्राप्त करना, इस जीवन का उद्देश्य बताया है क्षात्रधर्म का पालन करना, यह सब अपने आप घटित हो जाएँगे। आज के मंगल प्रभात में श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से यही मंगल संदेश है। ●

जो है उसे न मानना और जो नहीं है उसे मानना यह आध्यात्मिक जगत की समस्या है। है 'या' नहीं के बीच संशय है तब भी जिज्ञासा वश साधक बढता जायेगा। जिज्ञासा खोने पर उसके विकास का मार्ग अवरुद्ध होना भी अवश्यंभावी है। जो सत्य को एक बार पकड़ कर उसे छोड़ता नहीं, उसी ने सही मार्ग पकड़ा है।

**– पू. तनसिंहजी**

गतांक से आगे

# पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

## ''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

**– चैनसिंह बैठवास**

राठौड़ वंश के अग्रज राव सीहा जी की नवीं पीढ़ी में राव सलखा जी। सलखा जी के चार पुत्र हुए जिनमें मल्लीनाथ जी, बीरम जी, जैतमाल जी और सौभत जी। इतिहास पुरुष रावल मल्लीनाथ जी की सन्तान महेचा कहलाए जो राठौड़ों की एक खाँप है। रावल मल्लीनाथ जी के नाम से बाड़मेर क्षेत्र का वह भू-भाग भी मालाणी कहलाया। रावल मल्लीनाथ जी के पुत्र जगमाल जी की ग्यारहवीं पीढ़ी में हुए पबाजी और पबाजी की चौथी पीढ़ी में जन्मे ठाकुर रणछोड़सिंह जी। रणछोड़सिंह जी अपने क्षेत्र में दबंग व प्रभावशाली थे। पूज्य श्री तनसिंहजी के दादोसा ठाकुर रणछोड़सिंह जी के जीवन की एक घटना, जो पूज्य श्री के पिताजी श्री बलवन्तसिंह जी के शादी का कारण बनी। उस समय मवेशी (गायें वगैराह) रखने का प्रचलन कुछ ज्यादा ही था। गायों की पहचान के लिये ठाकुर लोग अपनी पसन्द का कोई निशान गाय के पिछले पैर के पुट्ठे पर लगवा देते थे जिससे पहचान हो जाती थी कि ये गायें किसकी हैं। इस निशान को लोकल भाषा में दाग कहा जाता था। ये दाग गायें कहीं भी विचरण करती, पहचान में आ जाती थी कि इनका मालिक कौन है? ठाकुर रणछोड़सिंह जी की गायें गाँव सुन्दरा की सरहद व उनके आस-पास विचरण कर रही थी। ठाकुर रणछोड़सिंह जी की गायों में एक अनदागी (बिना निशान की) गाय थी। वह गाय ठाकुर रणछोड़सिंह जी की थी या अन्य किसी की, पर रणछोड़सिंह जी की गायों के झुण्ड में शामिल थी। गिराब के ठाकुर जयसिंह जी की उस अनदागी गाय पर नजर पड़ी तो उन्होंने अपनी गायों वाला दाग (निशान) उस गाय पर लगाकर अपनी गायों में उस गाय को सम्मिलित कर ली। ठाकुर रणछोड़सिंह जी को जब उनकी इस हरकत का पता चला तो उन्होंने ठाकुर जयसिंह को सबक सिखाने के लिये उनकी सारी गायों को घेर कर वे अपने यहाँ ले आए। ठाकुर जयसिंह जी अपने क्षेत्र में जाने माने व्यक्ति थे। उनके अपने क्षेत्र में उनके पत्थर तैरते थे-यानी अपने क्षेत्र में उनकी बड़ी धाक थी। चारों ओर उनका डंका बजता था। वे प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। ऐसे व्यक्तित्व के व्यक्ति को ललकारने वाले ठाकुर रणछोड़सिंह जी उनसे सवासेर निकले। ठाकुर जयसिंह जी ने बड़ी समझदारी से काम लिया। उन्होंने ठाकुर रणछोड़सिंह जी जैसे व्यक्ति से दुश्मनी लेना ठीक नहीं समझा। उन्होंने बदला लेने के बजाए उनसे मित्रता करना बेहतर समझा और उन्होंने मित्रता का हाथ बढाते हुए अपनी पुत्री का विवाह ठाकुर रणछोड़सिंह जी के सुपुत्र कुंवर बलवन्तसिंह जी के साथ कर घनिष्ट मित्रता कायम की। इस शादी से बलवन्तसिंह जी के दो सन्तान हुई- प्रतापसिंह व जैतमालसिंह।

संवत् 1975 में एक महामारी की लहर चली जिसमें कई लोग कालकलवित हुए। इस महामारी में ठाकुर जयसिंहजी की पुत्री और ठाकुर बलवन्तसिंह जी की पत्नी जसोड़ भटियाणी जी का देहान्त हो गया। भटियाणी जी के स्वर्गवास के बाद दूसरे विवाह के प्रयास हरसाणी तथा गिराब क्षेत्र के गाँवों में किये गये पर वहाँ बात बैठी नहीं। ठाकुर बलवन्तसिंह जी महेचा के परिवार के चैनसिंह (चिमजी) बैरसी सोढा हड़मतसिंह जी के परिवार के भाणेज थे, वे इनका

विवाह बेरसियाला करवाने के इच्छुक थे। बैरसी सोढा हड़मतसिंह जी के पुत्र सगतसिंह जी का मालाणी क्षेत्र में आना-जाना रहता था, इसलिए इनकी यहाँ पहचान थी। सगतसिंह जी ने अपनी बड़ी बहन मोती कंवर जी का सम्बन्ध ठाकुर बलवन्तसिंह जी महेचा के साथ तय कर दिया तथा शादी की तारीख भी तय कर दी। ठाकुर बलवन्तसिंह जी का सम्बन्ध बेरसियाला हुआ है, इसकी जानकारी सगतसिंह जी के अलावा बेरसियाला गाँव में किसी को नहीं थी। विवाह की तारीख तय करके आये, इसकी भी जानकारी गाँव में व परिवार में किसी को भी नहीं थी।

जिस दिन बारात आने वाली थी, उस दिन सगतसिंह जी ने कोटड़ी (मेहमानों के बैठने का स्थान) की सफाई और सामान्य व्यवस्था बारातियों की आवभगत के लिये की। बारात कब आ रही है इसके लिये वे बार-बार टीले पर जाकर देखने लगे। कोटड़ी की सफाई, सामान्य व्यवस्था और सगतसिंह जी का बार-बार टीले पर जाकर किसी के इंतजार में देखना, यह सब देखकर गाँव के लोगों ने इसका कारण पूछा तो बताया कि आज बारात आने वाली है। गाँव के लोगों ने पूछा आज किसकी शादी है, तो बताया कि हड़मतसिंह जी की बड़ी पुत्री और मेरी बहन मोतीकंवर जी की। थोड़ी देर बाद सायंकाल में 15-20 ऊँटों पर बारात आती दिखी तो गाँव के बालक उत्सुकतापूर्वक सामने दौड़कर गये और बालकों ने बारात आने की सूचना गाँव में दी। इस रिश्ते की पहले से जानकारी नहीं होने पर दुल्हे की उम्र अधिक होने के कारण हड़मतसिंह जी की पत्नी व गाँव के अन्य लोगों ने विवाह करने से स्पष्ट मना कर दिया।

ठाकुर बलवन्तसिंह जी वचन सिद्ध आध्यात्मिक पुरुष थे। उन्हें भविष्य का भी ज्ञान था। उन्हें आभास हुआ कि मेरी दूसरी शादी से एक महान आत्मा का अवतरण होगा। इसलिए उन्होंने दूसरी शादी करना तय किया।

ठाकुर बलवन्तसिंह जी शकुन-शास्त्र व ज्योतिष-शास्त्र के अच्छे जानकार थे। उन्होंने गाँव के लोगों को कहा कि जिस कन्या से मेरा विवाह होने वाला है, उसका सुहाग बहुत कम है, चाहे इस कन्या का विवाह युवा व्यक्ति से भी क्यों न हो, विधाता ने इसका सुहाग कम ही लिखा है। गाँव में शंकरलाल जी नाम के अच्छे ज्योतिषी थे। गाँव के लोगों ने इस सम्बन्ध में शंरकलाल जी ज्योतिषी से बात की तो उन्होंने भी यही बात कही, जो ठाकुर बलवन्तसिंह जी ने कही। ज्योतिषाचार्य शंकरलाल जी की बात सुनकर गाँव वाले इस शादी के लिए सहमत हो गये परन्तु हड़मतसिंह जी की पत्नी इस शादी के लिये तैयार नहीं थी। उन्होंने हाथ में तलवार ली और विरोध में खड़ी हो गई। कन्या की माँ को विकराल रूप में देखकर लोग सहम गये। माँ ने कन्या को भेड़ों और बकरियों के झुण्ड में जाकर छिपने के लिये कहा और स्वयं तलवार लेकर विरोध करने लगी। कोशिश करने पर भी माने नहीं। ऐसी परिस्थिति बनने पर लोगों ने कन्या की माँ को ओरड़ी (कच्चा कमरा) में बन्द कर दिया। शादी की रस्म ललाट पर दही देना, आरती करना आदि रस्में सगतसिंह जी के काकीसा ने सम्पन्न कर विवाह सम्पन्न करवाया। इस तरह संवत् 1976 के माघ माह में ठाकुर बलवन्तसिंह जी महेचा का दूसरा विवाह बेरसियाला के सोढा ठाकुर हड़मतसिंह जी की बड़ी पुत्री मोतीकंवर से हुआ। इस शादी से उनके बड़े पुत्र प्रतापसिंहजी नाखुश थे। उनकी दूसरी शादी से बाप-बेटे में मन-मुटाव हो गया।

बैरसी सोढ़ा हड़मतसिंह जी के चार सन्तान थी- मोतीकंवर जी, सगतसिंह जी, ताराकंवर जी और अन्तर कंवर जी। संवत् 1976 के माघ माह में ठाकुर बलवन्तसिंह जी महेचा की अर्धांगिनी के रूप में दुल्हन का सेहरा बाँधे, हींगलू से माँग भर, सोढा हड़मतसिंह जी की बड़ी पुत्री मोती कंवर जी ने बाड़मेर में स्थित

अपने ससुराल घर में प्रवेश किया। घर में हर्षोल्लास व खुशियाँ भरा विवाह का उत्सव था।

विक्रम संवत् 1980 के माघ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को सूर्योदय से पूर्व गाँव के बेरसियाला में ठाकुर बलवन्तसिंह जी को उनकी दूसरी पत्नी मोतीकंवर जी की कोख से एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, तो सगतसिंह जी के घर में उस दिन खुशियाँ बांटी गई, पूरे गाँव बैरसियाला में हर्षोल्लास का माहोल था। जन्म से नौ दिन बाद नामकरण संस्कार हुआ और नाम दिया गया, तणेराज। अपने ननिहाल बैरसियाला में अपने मामा सगतसिंह जी के घर से अपने जन्म के दो माह बाद जब बालक तणेराज अपनी माताश्री मोतीकंवर जी के साथ अपने पैतृक घर बाड़मेर लौटा तो चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण छा गया, खुशियाँ मनाई गई, बधाइयाँ बाँटी गई। बालक तणेराज को बधाई स्वरूप सर्वप्रथम छाती से लगाया, उसके बड़े पिता रणजीतसिंह जी ने और उसके बाद तो बधाई देने वालों का तांता ही बंध गया।

ठाकुर बलवन्तसिंह जी महेचा जाने-माने व्यक्ति थे। पूरी मालाणी में वे लोकप्रिय थे। उनके यहाँ आने वालों की सदा ही भीड़ लगी रहती थी। जब वे घर पर होते, कमरे के भीतर लोगों को बैठने के लिये कठिनाई से ही जगह मिल पाती थी, जिन्हें जगह नहीं मिल पाती वे कमरे के बाहर ही बैठे रहते, बाहर जूतियाँ रखने को भी जगह नहीं बचती। इन दिनों पुत्र को बधाई देने वालों का आना-जाना होने के कारण भीड़ और भी अधिक रहने लग गई।

शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की कला की भाँति बालक तणेराज बढने लगा। बालक तणेराज अभी अपनी शैशवावस्था में अपने घर के आँगन में चलना सीख ही रहा था और उनकी माता मोतीकंवर जी को प्रणय सूत्र में बंधे छः वर्ष ही बीते थे, कि मालाणी के विख्यात और लोकप्रिय ठाकुर बलवन्तसिंह जी महेचा अपनी दूसरी पत्नी को छोड़ स्वर्गवासी हो गए। केवल पौने दो वर्ष के अबोध बालक के सिर पर सफेद पाग बंधवा दी गई और कुंवर तणेराज से ठाकुर तणेराज हो गया, मात्र नब्बे रुपये वार्षिक आय के ठाकुर।

ठाकुर बलवन्तसिंह जी का छोटा पुत्र जैतमालसिंह तो पिता से पूर्व ठीक एक वर्ष पूर्व ही संसार छोड़ चुका था। ठाकुर बलवन्तसिंह जी का बाड़मेर स्थित मकान जहाँ दिन-रात आने-जाने, मिलने वाले लोगों का मेला लगा रहता था, अब एक दम सूना हो गया था। सभी का आना-जाना बंद हो गया था। अब न कमरे के भीतर आदमियों की भीड़ रहती थी और न बाहर जूतियों के ढेर। अपने कहलाने वालों ने भी मुँह फेर लिया, इधर से गुजरते हुए भी इस ओर देखते भी नहीं- जैसे सब कुछ पराया हो गया था। इस घर पर आर्थिक कठिनाइयों का पहाड़ ढह पड़ा। आर्थिक तंगाई क्या होती है, इस घर ने बहुत शीघ्र ही अनुभव कर लिया और यह भी अनुभव कर लिया कि सुख के दिनों में दुनिया के लोगों का रुख क्या रहता है और कठिनाइयों के बादल घिर आने पर वे ही लोग कितने बदल जाते हैं। अब घर में आदमी के नाम पर बालक तणेराज और दूसरा साठ वर्ष का बूढा धूड़ा वजीर तथा अपने पति के वियोग में बैठी दुखीयारी बालक तणेराज की माँ मोती कँवर जी केवल तीन प्राणी।

**(क्रमशः)**

संसार में जिसने कुछ खोया नहीं, उसने पाया नहीं। जो हमारे हाथ आता है, उसे हम संपूर्ण रूप से नहीं पाते। जब हम त्याग द्वारा उसे पाते हैं तभी वह हमारे हृदय का सच्चा धन हो उठता है।

**- रविन्द्रनाथ टैगोर**

# तनसिंघ जी

– संतोष बरड़वा

इंण मारवाड़ री धरती में,
अगणित सूरा औतरिया जी।
वै जिया मर्या मायड़ खातिर,
भलपंण कारज घण करिया जी।।

थळवट वाळो आथांण जठै,
बळवंत जी ठाकर री पोळयां।
हीरो जायौ हो मां मोती,
सुर आयौ मिनखां री खोळयां।।

बाढाणौं हरख्यौ हिवड़ै में,
गूंजे हो मंगळगीतां सूं।
पोळां ढमकै ढम ढोलां सूं,
भरियौ आंगण अपणेतां सूं।।

ठाकर सा अणहद राजी हा,
मायड़ चहकै अर मुळकै ही।
सुभ नांव रखायौ तणैराज,
घर घर में खुसियाँ रळकै ही।।

पंण हरख टिकै थिर नांय कठै,
परकत री चाल इसोड़ी है।
जो नेम विधाता रा बदळै,
खिमतावां कहो किसोड़ी है।।

पोळी मह पसर्या ठाकर सा,
पहर्या काळा ठकराणी सा।
कुंवर तणजी ठाकर वणियां,
पागां धवळी सिर राळी सा।।

सै सगा पराया बण बैठ्या,
जद तणैराज दुख पावै हो।
खुद हाथ सोगरा पोवतड़ौ,
नेनो सो भणवा जावै हो।।

सुख में तो सगळा हा सीरी,
पण दुख में कोय न आया सा।
मायड़ हा सांचा छतरांणी,
हेकलड़ा बोझ उठाया सा।।

दिनड़ा बीतै हा जियां तियां,
तनसिंघ जी होय गिया मोटा।
उणरो आपांणौ जोय जोय,
सगळा दुखड़ा व्हैगा छोटा।।

बूड़तड़ी रजपूती दीठी,
अर धरमपताका फाट्यौड़ी।
अंतस कूक्यौ चितकार करी,
मानवता खूंट्यां टांग्यौड़ी।।

तनसिंघ रै मनड़ै चिंत्या ही,
मोटोड़ौ दरखत तूटै हो।
भाई भाई रो दोखी हो,
रजपूती हाथां लूटै हो।।

बिखरेड़ा हा रिसता नाता,
सब छातर धरम नै भूल गिया।
कानी कानी खिंडियौड़ा हा,
सब गरब हिंडोळै झूल रिया।।

तणजी रो हिवड़ौ रोवै हो,
अंतस में पीड़ उठी भारी।
किमकर जोडूं बिखर्योड़ा नै,
किणबिध इक कौम करूं सारी।।

वै परतख सुर हा पिरथी पर,
जो धरमधजा निज 'कर' धारी।
रजपूती राखण रै कारज,
वै जोर लगाई हूंकारी।।

मैं मिनख मिनख नै जोडूंलौ,
ऊंघ्यौड़ा जाय जागऊंलौ।
सब हेक'ज जाजम जाय जमै,
अणहोणी करै दिखाऊंलौ।।

वै छातर धरम नै पाळण री,
खुद हाथां जमवारी लिन्ही।
रजपूती रीतां राखण नै,
वै संघ थरपना कर दिन्ही।।

जोड़्या मिनखां सूं मिनखां नै,
अर सबक सिखायौ धरम तणों।
वै संघ रै खातिर जिया मर्या,
छत्र्यां रो वधियौ मान घणों।।

तणजी सम साधक नांय मिळै,
वै मिनखपणैं रा हेताळू।
कोई ऊंच नीच मन न जाणी,
समता राखणिया किरपाळू।।

तणजी मोती हा हीरा हा,
तणजी हा भगवन् औतारी।
तणजी साख्यात परम जोती,
तणजी साधक हा तपधारी।।

तणजी री मै'मा मांडतड़ी,
माथौ संतोष झुकावै है।
मायड़भासा में तणजी री,
छतरांणी गाथा गावै है।।

गतांक से आगे

# पृथ्वीराज चौहान

– विरेन्द्रसिंह मांडण (किनसरिया)

**गोरी नाम का तूफान : भाग–2**

गोरी के जासूसों ने उसे बता दिया था कि उस समय अजमेर (विशेषकर उनके प्रधानमंत्री कदंबवास) का तब चौलुक्यों से विशेष और परस्पर बैर था[1]। सो अभियान आरम्भ करने पर गोरी ने पृथ्वीराज को एक पत्र भिजवाया। पृथ्वीराजविजय खंडित अवस्था में होने से इस प्रकरण में जानकारी अधूरी मिलती है। वैसे काव्य में गोरी का परिचय गोवध करने वाले एक राहु समान म्लेच्छ का है। गोरी का संदेश, जो कि काव्य में अब प्राप्य नहीं, क्या था इस विषय में इतिहासकार अनुमान लगाते हैं कि उसने पृथ्वीराज से गुजरात अभियान में सहायता माँगी या फिर अपनी अधीनता स्वीकार करने को कहा होगा। क्योंकि जब संदेशवाहक ने पृथ्वीराज से उत्तर के लिए पूछा तब तक वो भड़क चुके थे। और उनका दहाड़ता हुआ उत्तर ग्रन्थ में उपलब्ध है–''उसको (गोरी) मैं क्या कहूँ, यह जानते हुए भी कि मैंने उसके जैसे म्लेच्छों का सर्वनाश करने का बीड़ा उठा लिया है, उसने यह संदेश मेरे पास भेज दिया है''। गोरी के संदेश में अधीनता स्वीकारने की माँग हो इसकी सम्भावना कम है। जब गोरी का पहला अभियान शुरू से ही चौलुक्यों के विरुद्ध जा रहा हो तो इतनी जल्दी दूसरे राजा पृथ्वीराज को अधीनता के लिये चेताना तर्कसंगत नहीं लगता। गोरी उस समय वैसे भी तराइन के दिनों की तुलना में कम शक्तिशाली था।

अधिक संभावना इस बात की है कि गोरी ने पृथ्वीराज को चौलुक्यों के विरुद्ध साथ आने का न्योता दिया। जो कि कदम्बवास–चौलुक्य शत्रुता के प्रकाश में भी उचित लगता है। इस न्योते को ठुकराते हुए पृथ्वीराज ने प्रतिकार–पूर्वक दूत को याद दिलाया कि उसका स्वामी म्लेच्छ है और म्लेच्छों के नाश का तो उन्होंने अपने पूर्वजों की भाँति प्रण लिया है।

यहाँ दो बातें ध्यान देने योग्य हैं– 1. गोरी को लगता था कि पृथ्वीराज को अन्य भारतीय राजाओं के विरुद्ध उपयोग में लिया जा सकता है। 2. गोरी और पृथ्वीराज एक दूसरे से व एक दूसरे की गतिविधियों से पूरी तरह अनजान नहीं थे।

पृथ्वीराजविजय के अनुसार इस घटनाक्रम से कुछ ही समय पहले पृथ्वीराज ने नागार्जुन (विग्रहराज चतुर्थ के छोटे पुत्र) को उत्तराधिकार युद्ध में परास्त किया था।

मुस्लिम सेना के अभियान की ओर लौटते हैं। प्राप्त मानचित्र से प्रतीत होता है कि गोरी की सेना का विध्वंस दो समानांतर मार्गों पर हुआ। इनमें से छोटे क्षेत्र (बीकमपुर से ओसियां तक) में हुई लूटपाट, विध्वंस आदि गोरी की वापसी के समय के नहीं हो सकते। कारण शीघ्र स्पष्ट होगा। फिलहाल इतना कहेंगे कि गोरी के छोटे दस्ते ओसियाँ तक आना पृथ्वीराज को एक चेतावनी माना जा सकता है क्योंकि यह स्थान अजमेर से केवल 200 कि.मी. की सीधी दूरी पर और चौहान राज्य में सीमा से बहुत भीतर है। मूल सेना का अजमेर राज्य में ज्यादा भीतर न जाने का कारण यह हो सकता है कि गुजरात जाते समय चौहान पीछे से उन पर बड़ा आक्रमण न कर दें।

उधर गोरी लोद्रवा में रावल जैसल को राजा बनवाने के बाद किराडू, सांडेराव में लूटपाट करता हुआ पूर्व की ओर आगे जा रहा था। अगला वार हुआ अरावली पर्वतमाला से ठीक पहले बसे नाडोल पर जो कि एक छोटे से राज्य की राजधानी भी था। नाडोल के राज्य पर एक अन्य चौहान परिवार का शासन था और यह अजमेर के तत्कालीन परिवार से भिन्न था (मूलत: फिर भी दोनों चौहान ही थे) नाडोल का चौहान राजवंश उस समय चौलुक्य राजाओं के अधीन रहता था। तत्कालीन बिजोलिया शिलालेख से

पता चलता है कि कैसे नाडोल, पाली और जालौर ने विग्रहराज के क्रोध की मार झेली।

छोटा राज्य होने के कारण नाडोल के चौहान अकेले गोरी का सामना नहीं कर सकते थे। सो दूसरों से मिलकर बड़ी सेना बनाने में ही बुद्धिमानी थी। नाडोल को गोरी ने जमकर लूटा।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के कानों में पड़ा तो राजसभा में ही पृथ्वीराज तमतमाते हुए प्रतिशोध को उठ खड़े हुए और गोरी को धूल में मिलाने के लिये सेना को सज्ज करने के आदेश दिये। ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षण पर कदंबवास की बुद्धि किसी और ही दिशा में चल रही थी। प्रधानमंत्री ने पृथ्वीराज से कहा-राजन यह क्रोध का समय नहीं, दोनों ओर हमारे शत्रु हैं जो परस्पर युद्ध कर नष्ट हो जाएँगे। सो आपको प्रयास नहीं करना चाहिए।

मार्गदर्शक मंडली पर निर्भर किशोर वय पृथ्वीराज उस समय कुछ ना कर पाए। यह छोटी मानसिकता वाला परामर्श और उससे राजा का झिझकना मध्यकालीन भारत के चरमराए हुए राजतंत्र का सटीक चित्रण है। इस समस्या के भीषण परिणाम और घाव भारतीय उपमहाद्वीप पर आज तक दिखाई देते हैं। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अपने स्वार्थी मार्गदर्शकों से अलग पृथ्वीराज की प्रथम प्रतिक्रिया उनके धर्मोन्मुख होने का प्रखर प्रमाण है।

म्लेच्छराज गोरी की विध्वंसकारी सेना नाडोल से दक्षिण की ओर मुड़ अरावली के किनारे चल रही थी। सामने था चंद्रावती के परमारों का राज्य। अरावली के उच्चतम पर्वत आबू से थोड़ा पहले जब यह लश्कर कासहरड़-क्यारा/कासिंद्रा पहुँचा तो उससे भिड़ने नाडोल व जालौर से केल्हण चौहान, कीर्तिपाल चौहान आबू से धारावर्ष परमार और तीनों पर वर्चस्व रखने वाले चौलुक्यों की राजमाता नाइकीदेवी एकत्र हो चुके थे। पर योजनानुसार गोरी को आगे बढ़ने दिया गया। एक तंग घाटी के पास कुछ सेना को देख भी अब तक की सफलताओं से फूले गोरी का माथा नहीं ठनका और वो लड़ने को ज्यों तो त्यों आगे बढ़ गया। जैसे ही गोरी की सेना घाटी के भीतर पहुँची, काल के कपाल मानो बलि लेने को खुल गए। पीछे से परमार और आगे चौहान, चौलुक्य दल म्लेच्छों पर टूट पड़े। अपनी सेना को बुरी तरह मार खिलाकर घायल गोरी जैसे-तैसे जान बचा भाग निकला[2]।

पृथ्वीराजविजय ने यहाँ भारतीय युद्धशैली के एक सिद्धांतवादी मिथक से पर्दा उठाते हुए कहा है कि-बची खुची म्लेच्छ सेना जब मरुभूमि की ओर भाग रही थी तो पीछा कर उन्हें और मारा गया, म्लेच्छ सैनिकों की पीठ पर घाव हो गए[3]। फरिश्ता का भी कथन है कि हारी हुई गोरी सेना मरुस्थल से होती हुई लौटी[4]। यह स्वाभाविक था क्योंकि अब स्वघोषित गाजियों की प्राथमिकता किसी और टकराव के बजाए केवल प्राण रक्षा थी।

भारत के एक सजग प्रहरी की भाँति थार मरुस्थल ने कई गाजियों की अन्तिम क्रिया सम्पन्न कर दी। यही युद्ध यदि कुछ समय पूर्व दिवंगत हुए नाइकीदेवी के पति अजयपाल चौलुक्य ने लड़ा होता तो गोरी की सेना में किसी के भी बचने की संभावना कम थी।

इस अभियान पर पृथ्वीराजविजय महाकाव्य व प्रबन्ध चिंतामणि के अतिरिक्त नाडोल-जालौर के चौहानों का 1261 ई. का सूंधा शिलालेख भी एक मौलिक स्रोत है। अगले भाग में हम इस घटनाक्रम के व इस पर लिखे आधुनिक साहित्य के कुछ और पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

**(क्रमशः)**

**उद्धरण :-** 1. पृथ्वीराजविजय के अनुसार, 2. प्रबंध चिंतामणि, पृ. 119, 3. सर्ग 11, श्लोक 12, 4. गुलशन इ इब्राहिम-मुहम्मद कासिम फरिश्ता, अनुवाद-जॉन ब्रिग्गस, खंड-1, पृ. 95

गतांक से आगे

# महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

**– भँवरसिंह मांडासी**

खरवा और वहाँ के गाँवों की रक्षा के नाम पर खरवागढ़ में ठिकाने के पुराने विश्वस्त राजपूतों को हरदम पहरा-चौकी पर बने रहने की हिदायत कर दी गई थी। गढ़-रक्षकों में कतिपय नाम उल्लेखनीय हैं- महताबसिंह और मेघसिंह दोनों पिता-पुत्र देवगढ़ (खरवा), प्रतापसिंह चांपावत पोकरण के जिन्हें राठी जी ने भेजा था, बारहठ चण्डीदान सारणियाँ, गजसिंह और जसवन्तसिंह जामोला (मसूदा) जोरावरसिंह भवानीपुरा (खरवा), भूरसिंह सीहावट, मोणसिंह चान्दावत (खरवा), अमरसिंह रिड़मलोत लीड़ी (खरवा), जैतसिंह चांदावत मायला (खरवा), पुरोहित दूलजी खरवा, जोशी नारायणदास खरवा, शिवदानसिंह सत्तावत राठौड़ खरवा, मोड़सिंह हूल और राजसिंह हूल खरवा।

राव गोपालसिंह द्वारा की गई उन सारी तैयारियों की क्रियान्विति किस समय और किस रूप में किए जाने की योजना थी? वे किस मौके पर और कहाँ पर प्रहार करना चाहते थे? इस संदर्भ में असली भेद उनके स्टाफ के किसी भी व्यक्ति को नहीं था। 1915 ई. के जनवरी-फरवरी माह में खरवा के बाहर जंगलों में कैम्प जीवन व्यतीत करते समय उनके स्टाफ में चार व्यक्ति- मोदसिंह, भूपसिंह, सवाईसिंह और पुरोहित मोड़सिंह ऐसे थे, जिन्हें राव गोपालसिंह द्वारा उठाए जाने वाले कदम का किंचित आभास जरूर रहा होगा, परन्तु उनके कथनों में अतिरंजना के सिवाय एकरूपता नहीं थी। फिर भी यह सुनिश्चित था कि, उनकी तैयारियों का लक्ष्य नसीराबाद की फौजी छावनी पर अधिकार करके अजमेर पर हमला करना था। किन्तु उक्त कार्य नसीराबाद छावनी के देशी सैनिकों के पूर्ण सहयोग से ही संभव हो सकता था जिसके लिये राव गोपालसिंह की तरफ से पहले से ही यथेष्ट प्रयास किये जा रहे थे। उस समय नसीराबाद की छावनी में थोड़े से अंग्रेज सैनिक अधिकारियों के अलावा ज्यादा राजपूताना राईफल्स की सैनिक जातियों के लोग थे, जिनमें राजपूतों की संख्या सर्वाधिक थी। क्रान्तिकारियों ने उन्हें बताया था कि जर्मन सेनाएँ जल्दी ही भारत पर हमला करेंगी। सभी सैनिक छावनियों के देशी सैनिक गदर में भाग लेंगे। भारी मारकाट मचेगी, अराजकता फैलेगी। इसलिए तुम्हारा भी धर्म है कि गदर के समय क्रान्तिकारियों के साथ होकर अंग्रेजों को निकालने और देश को आजाद कराने के धार्मिक कार्य में भाग लो।

पंजाब और उत्तरप्रदेश की सैनिक छावनियों में भी क्रान्तिकारियों ने गुप्त रूप से प्रवेश पा लिया था। और उनके प्रचार प्रभाव से देशी सैनिकों ने देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने हेतु होने वाले विप्लव में भाग लेने का पूरा मानस बना लिया था किन्तु वे सभी जर्मन आक्रमण की प्रतिक्षा में थे। जर्मन आक्रमण होने के बाद ही वे मैदान में उतर सकते थे।

मथुरा के समीपस्थ एक छोटी-सी जमींदारी का राजा महेन्द्र प्रताप जर्मनी से काबुल आकर ''अस्थाई हिन्दू-सरकार'' की घोषणा कर भारत में गदर मचते ही पंजाब पर कूच करने को तैयार बैठा था। जर्मन सम्राट विलियम केशर ने काबुल के अमीर हबीबुल्लाह खान को ऐन समय पर उसकी मदद करने के लिये कहला दिया था। वस्तुत: सम्राट ने काबुल के अमीर को गोपनीय रूप से पंजाब प्रान्त पर अधिकार करने के लिये प्रोत्साहित किया था।

जर्मन सम्राट ने भारत पर आक्रमण करने के पक्के इरादे कर रखे थे। उसने काबुल के अमीर को भारत के क्रान्तिकारियों की मदद के बहाने पंजाब पर हमला करने को प्रोत्साहित किया था। काबुल राज्य की सीमाएँ पंजाब से मिली हुई थी। सेनफ्रांसिस्को के गदर दल की सहायता और बंगाल के विप्लववादियों के सहयोग पर जर्मनों ने बंगाल पर आक्रमण के मनसूबे बाँध रखे थे। उनके केन्द्र स्थान बैंकाक और बेटेविया (जावा) थे। बैंकाक स्थित जर्मन जनरल स्टाफ का इरादा अमेरिका के लौटते हुए गदर पार्टी के सिक्खों पर निर्भर था और बेटेविया पर आक्रमण का बंगालियों पर। वे दोनों स्कीमें जर्मन के संघाई (चीन) स्थित काउन्सिल जनरल की निगरानी में चल रही थी।

सन् 1914-15 के बीच पंजाब में गदर फैलने की संभावना से और बंगाल में जर्मन जहाजों द्वारा हथियारों के जखीरे आने की खबर से भारतीय क्रान्तिकरियों के सभी दलों में अभूतपूर्व आश्चर्यजनक एकता कायम हो चुकी थी। सैनिक विद्रोह की संभावना की उपर्युक्त पृष्ठभूमि को जानते हुए राव गोपालसिंह नसीराबाद की सैनिक छावनी के देशी सैनिकों के विद्रोही बन जाने की स्थिति में ही नसीराबाद छावनी पर आक्रमण करना समयोचित मानते थे, पहले नहीं।

ऐसी हलचलें शासनकर्ता अंग्रेजों से कैसे छिपी रह सकती थीं। उन्हें इन विद्रोही गतिविधियों की सूचना अपने खुफिया विभाग से तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय सूत्रों से मिल चुकी थी। उन्होंने यहाँ की सभी छावनियों में अंग्रेज सैनिकों की संख्या बढ़ा दी और उन्हें श्रेष्ठतम शस्त्रास्त्रों से लैस कर देशी सिपाहियों पर कड़ी नजर रखने हेतु सजग कर दिया। विदेशों से जहाजों में भारत आने वाले भारतीय क्रान्तिकारियों को यहाँ उतरते ही बन्दी बनाकर जेलों में कैद कर दिया। जर्मनी से भेजे गये हथियारों से भरा एक जहाज समुद्र में डुबो दिया गया और अनेक क्रान्ति के नेताओं को पंजाब तथा बंगाल में गिरफ्तार कर लिया गया। (राऊलेट कमेटी की रिपोर्ट)

अपनी गुप्त योजना प्रगट हो जाने के भय से क्रान्तिकारियों ने जर्मन सहायता की प्रतीक्षा में समय न खोकर जल्दी से जल्दी देश में क्रान्ति संघर्ष शुरू करने की योजना बना डाली। उन्होंने क्रान्ति संघर्ष के श्री गणेश की तिथि सन् 1915 की 21 फरवरी निश्चित कर दी, किन्तु तब तक अंग्रेजों के गुप्तचर विभाग की सरगर्मियाँ अधिक बढ़ चुकी थी। कृपालसिंह नामक एक सिक्ख जो क्रान्तिकारियों में छद्म रूप से मिला हुआ-खुफिया विभाग का ही एक व्यक्ति था, ने उक्त निश्चित तिथि का भेद अंग्रेज अधिकारियों को दे दिया। उत्तरी भारत के समस्त प्रमुख नगरों में क्रान्तिकारियों के गुप्त स्थानों पर अचानक छापे मारे गये। क्रान्तिकारियों में गुप्त रूप से घुसे हुए देशद्रोहियों ने सरकारी गवाह बनकर देश-भक्तों को बन्दी बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। उनके भेद देने पर अनेक क्रान्तिकारी नेता बन्दी बना लिए गए। उनमें से अनेक लोगों ने जो यातनाएँ सहने में कच्चे थे, अपने सहयोगियों के नाम और ठिकाने बतलाने शुरू कर दिए। उन सूचनाओं के आधार पर धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ होने लगी। उन लोगों में से अनेकों ने सरकारी गवाह बनकर अपनी जानें बचाई। क्रान्ति की लपटें जाने-अनजाने सभी को अपना शिकार बनाने लगी थी।

पं. बालकृष्ण ऊखल ने तत्परता से उसी रात दिल्ली से अहमदाबाद जाने वाली मेल ट्रेन से एक विश्वस्त आदमी खरवा भेजकर राव गोपालसिंह को इस आकस्मिक रहस्योद्घाटन की सूचना दी। समीपस्थ गांवों में तत्काल आदमी दौड़ाकर वहाँ नियुक्त प्रमुख को व क्रान्ति नेताओं को सावधान कर दिया गया।

गोला-बारूद गुप्त स्थानों पर छिपा दिए गये, गाड़ दिए गये। उत्तम दर्जे की बिलायती बन्दूकें सुरक्षित रखने हेतु कुछ तो मारवाड़ के बालोतरा परगने के राजपूत सरदारों के पास जो राव गोपालसिंह के परम विश्वासी और समर्थक थे, उसी समय सोनजी, बाला आदि सरदारों के साथ भेज दी गई। कुछ वहीं गुप्त स्थानों पर रखवा दी गई। अपने स्टाफ के अनेक लोगों को जो कमजोर दिल थे-भूमिगत करके अज्ञात स्थानों पर भेज दिया गया। गोपाल-सागर के मैदान में लगे डेरे तम्बू उठवा कर राव गोपालसिंह अपने साथियों के साथ खरवा गढ़ में रहने को चले आए। सन् 1915 की फरवरी का महीना इस हलचल के साथ समाप्त हुआ।

देश में क्रान्तिकारियों की धरपकड़ जारी थी। क्रान्तिकारियों के नये-नये नाम और उनके भेद खुफिया पुलिस की जानकारी में आ रहे थे। आने वाली विपत्ति से राव गोपालसिंह सतर्क थे। जो समय उन्हें मिला, उनके लिये वरदान सिद्ध हुआ। उन चार महीनों के समय में उन्होंने अधिकांश गोपनीय फाईलें और पत्राचार जलवाकर नष्ट कर दिये। अपने सिलहखाने (शस्त्रागार) में रखे पुराने शस्त्रास्त्रों के अलावा गढ़ में रखी गई कारतूसों और गोली-शीशा-बारूद की नई सामग्री स्थानान्तरित कर दी गई। इस प्रकार चिन्ता-विमुक्त होकर राव गोपालसिंह अपने अनुशासित वीर साथियों के साथ खरवा गढ़ में निवास करते हुए आने वाली सम्भावित विपत्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

राव गोपालसिंह के जीवन की सनसनीखेज संकटपूर्ण घटनाओं के संदर्भ में लिखने से पूर्व-श्री शंकर सहाय सक्सेना द्वारा लिखित 'पथिक' नामक पुस्तक के अनर्गल और निराधार कथनों के निराकरण हेतु एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखना आवश्यक हो गया है ताकि विज्ञ पाठक उक्त पुस्तक के गलत कथनों से दिग्भ्रमित न हों। पथिक नामक पुस्तक पथिकजी की जीवनी है। इस पुस्तक में लिखित कथन अवलोकनीय है-उक्त पुस्तक में लिखा है -

1. क्रान्तिकारी नेताओं ने खरवा के राव गोपाल सिंह को ब्यावर पर और भूपसिंह (पथिक जी) को अजमेर तथा नसीराबाद पर हमला करने का कार्य सौंपा था। (पृ. 102)

2. राजस्थान के भूपसिंह-राव गोपालसिंह, मोड़सिंह और सवाईसिंह आदि के साथ 21 फरवरी, 1915 को खरवा स्टेशन से कुछ दूर जंगल में कई हजार वीर योद्धाओं का दल लिए, क्रान्ति की शुरुआत का संकेत पाने की प्रतीक्षा में तैयार था।

रात्रि को दस बजे के बाद अजमेर से अहमदाबाद जाने वाली रेलगाड़ी खरवा से गुजरती थी। उससे खरवा स्टेशन के समीप जंगल में एक बम का धमाका कार्यारम्भ का संकेत था। उस संकेत को पाते ही भूपसिंह को अजमेर पर और खरवा ठाकुर को ब्यावर पर आक्रमण करना था। किन्तु संकेत नहीं मिला। (पृ. 102)

3. बहुत अधिक संख्या में हथियार इकट्ठे किए गये थे, जिसमें तीस हजार से अधिक बन्दूकें थी। बहुत अधिक राशि में गोला और बारूद था। तुरन्त सब सामग्री को गुप्त स्थानोंपर छिपा दी गई। (पृ. 104)

4. अन्य सभी क्रान्तिकारी दलों को खरवा से हटा दिया गया। इसके उपरान्त भूपसिंह, ठाकुर गोपालसिंह, मोड़सिंह और सवाईसिंह आदि पाँच क्रान्तिकारी वीर बहुत से अस्त्र-शस्त्र, बून्दकें, गोला-बारूद, बम इत्यादि लेकर रातोंरात खरवा के गढ़ से निकलकर जंगल में बनी एक शिकारी बुर्ज (ओदी) में मोर्चा-बन्दी करके जा डटे। दूसरे दिन अजमेर का अंग्रेज कमिश्नर पाँच सौ सैनिकों की टुकड़ी लेकर खरवा आया। उनके गढ़ में न मिलने पर वह खोजता हुआ शिकारी बुर्ज के पास पहुँचा और बुर्ज को घेर लिया गया। (पृ. 104)

''पथिक'' नामक पुस्तक में उल्लेखित उपर्युक्त वर्णन कल्पना प्रसून एवं निराधार है। क्रान्तिकारियों द्वारा भूपसिंह को अजमेर व नसीराबाद पर आक्रमण करने की जिम्मेदारी सौंपने का कथन तो निरा हास्यास्पद है और भांग पीने वाले भंगोड़ियों की गप्प से अधिक उसका कुछ भी महत्त्व नहीं है।

दिल्ली से क्रान्ति योजना के रहस्योद्घाटन की खबर मिलते ही भूपसिंह का राव गोपालसिंह और उनके तीन साथियों के साथ, खरवा गढ़ से निकलकर जंगल में बनी शिकारी बुर्ज में जा बैठने और अंग्रेज कमिश्नर का 500 सैनिकों के साथ उन्हें वहाँ जा घेरने का कथन भी कल्पना की ऊँची उड़ान मात्र है। निराधार व तथ्यहीन है। सही तथ्य तो यह था कि दिल्ली से पं. बालकृष्ण ऊखल की सूचना मिलते ही राव गोपालसिंह जंगल में लगे तम्बू-डेरे उठवाकर 25 फरवरी, 1915 को खरवा गढ़ में आ गए थे। 27 जून, 1915 को अजमेर के अंग्रेज कलेक्टर ने खरवा गढ़ में आकर राव गोपालसिंह को आदेश सुनाया। उक्त घटनाक्रम का उल्लेख (सप्रमाण) इस पुस्तक के द्वितीय अध्याय में किया गया है। बनारस षड़यंत्र केस की प्रकाशित सरकारी रिपोर्ट में भी भूपसिंह का नामोल्लेख कहीं नहीं मिलता। अजमेर-मेरवाड़ा के प्रसंग में उक्त रिपोर्ट में खरवा राव गोपालसिंह के संदर्भ में लिखा है-

Thanks Gopalsingh Kharwa was in league with Rasbihari Bose in Feb. 1915. He was given charge for the emencipation of Ajmer Merwara in a wider plot of revolt at Delhi and other places. (Sedition Committee Report 1918)

इस उपर्युक्त सरकारी कमेटी की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि 'पथिक' नामक पुस्तक में अजमेर-मेरवाड़ा में किये गये क्रान्तिकारियों के कार्यों का श्रेय पथिक को देकर अनेक प्रकार के जो अनर्गल मनगढ़न्त कथन लिख दिए गये हैं वे सरासर गलत हैं, ऐतिहासिक तथ्यों की हत्या करके पाठकों को दिग्भ्रमित किये जाने का दुष्प्रयत्न मात्र है।

साभार : **'राव गोपालसिंह खरवा'**

लेखक : **सुरजनसिंह झाझड़**

**(क्रमशः)**

---

'मैं अपना काम ठीक-ठाक करूंगा और उसका पूरा-पूरा फल पाऊँगा।' यह एक ने कहा।

'मैं अपना काम ठीक-ठाक करूंगा और निश्चय ही भगवान उसका पूरा फल मुझे देंगे।' यह दूसरे ने कहा।

'मैं अपना काम ठीक करूँगा। फल के बारे में सोचना मेरा काम नहीं।' यह तीसरे ने कहा।

'मैं काम-काज और फल, दोनों के झमेले में नहीं पड़ता। जो होता है, सब ठीक है। जो होगा सब ठीक होगा।' यह चौथे ने कहा।

आकाश सबकी सुनरहा था। उसने कहा-'पहला गृहस्थ है, दूसरा भक्त है, तीसरा ज्ञानी है, पर चौथा परमहंस है या अहदी (आलसी); यह मैं कह नहीं सकता?

**- कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर**

गतांक से आगे

# मर्यादा के दृष्टिकोण से भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण

**– व्याख्याकार–परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी**
**संकलन–डॉ. भंवरसिंह भगवानपुरा**

**सीता परित्याग–** महारानी सीता के परित्याग का लांछन भी भगवान श्री राम पर आरोपित किया जाता है। किन्तु वस्तुतः वह राम के राजनैतिक रंगमंच का एक परिदृश्य मात्र था। इसे हृदयंगम करने के लिए राजनीति विशारद रावण के जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत है।

युद्ध में आहत रावण की ओर संकेत कर भगवान राम ने कहा–लक्ष्मण! रावण महान राजनीतिज्ञ है, उससे तुम राजनीति की शिक्षा ग्रहण करो। लक्ष्मण ने कहा–भैया! रावण और राजनीतिज्ञ! एक नारी के व्यामोह में पड़कर उसने अपने वंश का मूलोच्छेद करा डाला, स्वर्णिम लंका को धूल में मिला दिया। यदि उसे राजनीति का कुछ भी भान होता तो इस सर्वनाश से बचने–बचाने का उपक्रम किया होता। 'अरध तजहिं बुध सरबस जाता' अर्थात् बुद्धिमान लोग सर्वस्व जाता देखकर आधे की रक्षा के लिये आधा छोड़ दिया करते हैं।

राम के कहने से लक्ष्मण गये, रावण के सिर की ओर खड़े होकर बोले–महान सम्राट! मैं राम का अनुज लक्ष्मण आपसे राजनीति की शिक्षा लेना चाहता हूँ। पर रावण कुछ बोला नहीं। लक्ष्मण ने आकर राम को बताया तो राम ने पूछा कि तुम खड़े कहाँ थे। लक्ष्मण ने कहा सिर की ओर। राम ने बताया कि लक्ष्मण शिक्षा लेने के लिये गुरु के श्रीचरणों में प्रणिपात करो, निवेदन करो। लक्ष्मण गये, चरणों की ओर खड़ेहोकर सादर प्रणाम कर बोले–सम्राट! इतना सुनते ही रावण एक झटके में उठा, लक्ष्मण का धनुष और तरकश छीन लिया। चकित लक्ष्मण कुछ कर पाते इससे पूर्व ही रावण बाण का अनुसंधान कर, लक्ष्मण के गले का लक्ष्य लेकर, प्रत्यंचा खींचकर बोला–देख! राम का भाई है इसलिए जीवित छोड़ता हूँ। लक्ष्मण! राजनीति की पहली शिक्षा तो यह है कि शत्रु चाहे मरणासन्न हो, अथवा मर ही क्यों न गया हो, उसके पास जाना है तो सदैव सावधान मुद्रा में जाओ। लक्ष्मण बोले–रावण तुम उपदेश तो अच्छा कर लेते हो पर नीति का पालन नहीं।

रावण लक्ष्मण के भाव को समझ गया और लक्षमण की शंका का समाधान करते बोला–वंश की रक्षा के लिए ही मैंने विभीषण को राम की शरण में जाने के लिये विवश किया। कल विभीषण पर मरणान्तक शक्ति का प्रहार क्यों किया? लक्ष्मण के इस प्रश्न का उत्तर देते रावण बोला–लक्ष्मण! मुझे संदेह था कि राम मेरे वंश की रक्षा कर पायेंगे या नहीं, इसी की परीक्षा के लिये मैंने शक्ति का प्रहार किया। रामजी ने अपने वक्षस्थल पर उस शक्ति को झेल लिया। इससे मैं आश्वस्त हो गया कि अब मेरा वंश सुरक्षित है। इसीलिए जितने भी दिव्यास्त्र मैंने छिपा रखे थे, वे सब उडेल दिए। मैं जानता था कि रामजी का तो कुछ बिगड़ने वाला नहीं है, व्यर्थ ही इतने अस्त्र–शस्त्रों के संग्रह का क्या होगा? लोग देख तो लें कि रावण कितना पराक्रमी है, दिव्यास्त्रों का ज्ञाता है। राम से युद्ध का निर्णय तो मैंने शुर्पणखा की सूचना से ही कर लिया था।

**खरदूषण मोहिं सम बलवन्ता–तिन्हहि को मारइ बिन भगवन्ता।**
**जो भगवंत लीन्ह अवतारा सर प्रान तजे भव तरऊं।**

सुर, नर, असुर अथवा नागों में ऐसा कोई नहीं है जो मेरे सेवक से भी विरोध करने का साहस कर सके।

फिर खरदूषण तो मेरे समान ही बलवान थे। भगवान के अतिरिक्त उनका वध करने में कौन समर्थ है? भगवान ने अवतार लिया है, उन्हीं के बाणों से प्राणों को त्याग कर भवसागर से पार हो जाऊँगा। शाश्वत धाम को पाने का अन्य साधन भजन है किन्तु भजन तो हम लोगों से होगा नहीं। मैं मारीच के पास गया। इससे भी मेरे निश्चय को बल मिला। किन्तु मैंने अपना मनोभाव गुप्त ही रखा। सीता भी मेरे निर्णय को पुष्ट कर रही है कि भगवान है। मुझे सबने समझाया, विभीषण ने कहा, कुम्भकरण ने कहा, माता कैकसी ने कहा, मंत्री माल्यवान ने कहा कि राम भगवान है। जब-जब किसी ने कहा 'ये भगवान हैं' मैं आग बबूला होने का सकल अभिनय करता रहा कि मैं उन्हें भगवान मानता ही नहीं।

लक्ष्मण लंका के सभी निवासी मेरा अनुसरण करते थे। हमने पाप किया और सबसे कराया। मैंने सोचा क्यों न प्रभु के धाम का मार्ग सबको सुलभ करा दूँ। इसलिए पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र इत्यादि सभी को मैंने राम के बाणों के समक्ष धकेल दिया। मैं ज्योतिष का भी आचार्य हूँ। मुझे ज्ञात था कि आयु के कितने दिन शेष हैं। जाना तो पड़ेगा ही। स्वर्णिम लंका कब तक हमारी रहेगी। इसको तो छूटना ही था। प्रश्न था कि भगवान के धाम जाऊँ या नरक? धाम के लिये हमने मार्ग प्रशस्त कर लिया। लक्ष्मण! तुम धाम आओगे तो वहाँ मैं तुमसे मिलूंगा। यह राजनीति थी लक्ष्मण। न हमने विभीषण का अपमान किया है न माता जी सीता का अपहरण, हमें तो अपने लक्ष्य की सिद्धि करनी थी।

बाल्यकाल में गुरु वशिष्ठ ने राम को अस्त्र-शस्त्रों का अभ्यास कराया था। महर्षि विश्वामित्र ने उन्हें दिव्यास्त्र प्रदान किए। महर्षि अगस्त्य ने उन्हें उन अस्त्रों को दिया जिनसे रावण का वध हुआ था। सरभंग जी ने भी उन्हें तलवार प्रदान की थी किन्तु इन सबसे उन्नत स्तर के शस्त्रास्त्र महर्षि बाल्मीकि की संरक्षा में थे। वे महापुरुष किसी सत्पात्र को उन्हें सौंपना भी चाहते थे, कब तक उन दिव्यास्त्रों की सुरक्षा करते। राम इस रहस्य को जानते थे इसीलिए लंका विजय के उपरान्त अयोध्या आने पर उन्होंने इन दिव्यास्त्रों को पाने की योजना बना ली। राम ने सीता से कहा-सीते! कोई इच्छा हो तो बताओ। सीता ने एक बार पुन: वन देखने की लालसा व्यक्त की। वह शान्ति व सुख जो तपोधन महात्माओं के दर्शन और प्रवचनों में था, फुदकते मृग-शावकों एवं चिन्तनशील देवियों में था, वह राज प्रासादों में कहाँ। राम ने आश्वासन दिया कि वहाँ चलने की तैयारी करें।

गुप्तचरों ने बताया कि सर्वत्र आपकी प्रशंसा हो रही है। राम ने जानना चाहा कि उनके विरोध में भी कुछ कहा जा रहा है? गुप्तचर ने बताया-एक रजक कह रहा था कि यद्यपि महारानी सीता महासती है, अग्नि परीक्षा में भी उत्तीर्ण है फिर भी सिंहासन पर विराजने योग्य नहीं है क्योंकि उन्होंने रावण की लंका में निवास किया है। सिंहासन की शोभा बढाने के लिये रामजी को एक विवाह और कर लेना चाहिए। रामजी ने किंचित उदास होने का अभिनय किया। लक्ष्मण को उन्होंने आदेश दिया कि वह सीता को जंगल में छोड़ आए। नदी में प्राण देने को उद्यत सीता को महर्षि बाल्मीकि ने आश्रय दिया।

कुछ समय बाद महर्षि को सूचना मिली कि सीता ने लव और कुश दो पुत्रों को जन्म दिया है। बच्चों को पढने और शस्त्राभ्यास करते ग्यारह वर्ष व्यतीत हो गये थे। इसी समय भगवान राम के अश्वमेध का घोड़ा बाल्मीकि आश्रम के समीप आया। इसके बाद जो घटना हुई उससे भारत का जनमानस परिचित है, विस्तार देने की जरूरत नहीं है। राम ने समझाया- बच्चों! वह थी राजनीति। राजनीति के सूत्र अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं, जिन्हें बड़े होने पर तुम समझोगे। सीता-

परित्याग के माध्यम से उन्होंने महर्षि के दिव्यास्त्रों को प्राप्त कर लिया। चक्रवर्ती सम्राट उन अस्त्रों की भिक्षा तो माँग नहीं सकता था। वे अस्त्र ऋषि के लिये भार स्वरूप हो चुके थे। अकारण भजन छोड़कर उधर ही ध्यान दिया करते थे कि कोई उनका दुरुपयोग न कर ले। वे सारे दिव्यास्त्र उन्हें मिल गये। बच्चों के पालन-पोषण के लिये माँ से श्रेष्ठ संरक्षिका विधाता की सृष्टि में कोई आज तक है ही नहीं। उन्होंने सोचा, सिंहासन की अपेक्षा वन में बच्चों की देखरेख करना सीता के लिये भी अधिक श्रेयस्कर है। देखरेख सीता से हो रही थी और विद्याध्ययन गुरुदेव से। यह थी राम की सूक्ष्म राजनीति। परित्याग तो उन्होंने किया ही नहीं।

इसी प्रकार श्री कृष्णकालीन एक आख्यान है जिससे भगवान श्रीकृष्ण के राजनीतिक कौशल का परिचय मिलता है। श्रीकृष्ण द्वारा कंस-वध से खिन्न मगध नरेश जरासंध ने पूरब से और कालयवन ने पश्चिम दिशा से मथुरा पर आक्रमण कर दिया। नारदजी ने सूचना दी। हलधर ने आवेश में कहा-अभी देखता हूँ। श्रीकृष्ण ने कहा-नहीं दाऊ! नानाश्री जरासंध दल-बल सहित आ रहे हैं, आप उनका स्वागत करो, कालयवन को मैं देख लेता हूँ। दाऊ ने श्रीकृष्ण को बताया कि कालयवन को शिवजी का वरदान है कि आमने-सामने युद्ध में कोई उसे पराजित नहीं कर सकता है। श्रीकृष्ण ने कहा-दाऊ! आप निश्चिन्त रहें।

वे सीधे कालयवन के समक्ष पहुँच गये और ललकारा कि हम दोनों परस्पर मल्ल युद्ध करें तो कैसा रहेगा? कालयवन क्रोधान्ध होकर रथ से कूद पड़ा। वह बोला-तू मुझसे युद्ध करेगा? चल खड़ा हो सामने। श्रीकृष्ण ने कहा-ऊँहूँ! मैं अब तुम्हारा गला दबाऊँगा। श्रीकृष्ण अपना पीताम्बर हिलाते चल रहे थे, कालयवन उनका पीछा कर रहा था। सामने एक गुफा थी। श्रीकृष्ण उसमें प्रवेश कर गये। कालयवन बहुत प्रसन्न हुआ कि अब फंस गया, कहाँ जाएगा? गुफा में राजर्षि मुचुकुन्द योग निद्रा में तपस्या कर रहे थे। श्रीकृष्ण ने अपना पीताम्बर उनके ऊपर डाल दिया और ओट में खड़े हो गये। उन्हें ढूंढता हुआ कालयवन पीताम्बर देखकर भ्रमवश राजर्षि को ही कृष्ण समझ बैठा, उन्हें पैर की ठोकर मारकर बोला-उठ! साक्षात काल को निमंत्रण देकर पीताम्बर ओढ कर सोया है। ऋषि के लात मारी। ऋषि की दृष्टि पड़ते ही कालयवन भष्म होगया। ऋषि ने दायें-बायें दृष्टिपात किया तो श्रीकृष्ण दिखाई पड़े। ऋषि ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और निवेदन किया-भगवन्! आपकी ही प्रतीक्षा में मैं यहाँ कन्दरा में पड़ा हुआ था। आज आपने कृपा की, दर्शन दिया। भगवन! यह कौन मर गया? श्रीकृष्ण बोले-ऋषिवर! यह कालयवन था। प्रत्येक वरदान में उसकी समाप्ति के अंकुर भी तो छिपे रहते हैं। अस्त्र से नहीं तो वह आपके दृष्टिनिक्षेप मात्र से जल उठा।

भगवान इस रहस्य को जानते थे कि कालयवन या ऋषि मुचुकुन्द को क्या वरदान प्राप्त है। यदि वे पहले ही यह घोषित कर देते कि मैं वहाँ ले जाऊँगा और इस तरह उसे फसाऊँगा तो क्या कालयवन गुफा में प्रवेश करता? राजनीति में परिणाम दिखाई पड़ना चाहिए, योजना किसी पर प्रकट न होने पाये। योजना विदित होते ही सफलता संदिग्ध हो जाती है। परिणाम दिखाई पड़े, योजना नहीं। ऐसे मनोरथ वाले संसार में कभी असफल नहीं होते। सारांशत: भगवान श्रीकृष्ण की राजनीति, रावण की राजनीति या भगवान राम की राजनीति, इन सबके मूल में यही सूत्र था कि कार्य-सिद्धि के पश्चात ही लोगों को ज्ञात हो पाता था कि योजना क्या थी। इसलिए सीता-परित्याग मात्र इस योजना का क्रियान्वयन था कि एक महापुरुष के सिर का भार हो गया। दिव्यास्त्रों का संग्रह राजकीय उपयोग में आगया और बच्चों की शिक्षा भी स्वत: हो गयी। **(क्रमश:)**

# हमारे प्यारे बाबोसा

– श्रीमती क्षिप्रा लूंछ

जब आपके देवलोक गमन का समाचार मिला तो विचारों का ऐसा वेग उमड़ा कि सब कुछ जैसे अवरुद्ध हो गया है। सब विचार अटक गए। याद आ रही थी आपकी कही बात–'**थारे बिना शिविर में रौनक कोनी आवै, तूं सारै दिन हँसती जो रहवै है।**'

क्या कहूँ आप क्या थे, आप तो बालिका शिविरों का आधार थे। आपके बिना शिविर की कल्पना करें तो जैसे वह आनन्द, वह उमंग, सदैव नयापन ही जैसे न रहे। दोपहर का बौद्धिक मतलब आनन्द, भोलावण, सलाह, डाँट, दुनियादारी की समझ और वैसे ही आपके चेहरे पर बदलते भाव।

आपके साथ बेट द्वारिका अन्तिम शिविर था और विदा के समय हम झुर-झुर रो रहे थे, जैसे कोई संकेत हो कि आपके साथ अब और शिविर नहीं कर पाऊँगी। एक दिन आपने कहा था-किसपर विश्वास करें, विश्वास करते डर लगता है। सच है कि आपने बहुत विश्वास किया, बहुत लोगों पर किया, पर उस विश्वास को चकनाचूर भी बहुतों ने ऐसे किया कि आपका विश्वास से भी विश्वास उठ गया। पर मैंने तब भी यह कहा था और आज भी कहती हूँ-बाबोसा मेरे जीवन को घड़ने वाले पहले मेरे माता-पिता हैं तो दूसरे आप। आप और माँ तो अब हो नहीं पर आप से झूठ बोलूं तो बड़ा पाप लगेगा। सच बाबोसा आप मुझ पर विश्वास कर सकते हो, आपकी शिक्षा पर कलंक का एक दाग भी नहीं लगने दिया मैंने। बाबोसा आपको पता है कि मेरी माताश्री कभी अकेले ननिहाल तक भी नहीं भेजती थी, हर बार शिविर में जाने की भी अनुमति नहीं मिलती थी, जब तक उनके अन्दर छिपी ममता आश्वस्त नहीं होती थी कि रतनसिंहजी ही शिविर ले रहे हैं, तभी अनुमति मिलती थी। कितना विश्वास था उनकी पारखी नजरों में आपके प्रति।

एक प्रश्न और किया था अपने एक बार कि शिविर में क्यों आए? बाबोसा कैसे कह देती कि कर्ज चुकाने में सहयोग करने। मैं तो यह सोच के बैठी थी कि जिस दिन आपको लगेगा और आप स्वयं जिम्मेदारी देंगे। कैसे कहती कि मैं स्वयं को निखारने और जिम्मेदारी लेने आई हूँ। क्योंकि मैं तो खुद बहुत-सी जिम्मेदारियों से बंधी हुई हूँ, आपकी तरह पूर्ण समर्पण वाली स्थिति में नहीं हूँ, वरना अमरस की तो कोई कमी नहीं कि उसके लिये ही शिविर में आएँ।

कैसे कहूँ आप हम सबके लिये क्या हो। किसी के लिए शिक्षक, किसी के लिये पिता, तो किसी के लिए प्रेरक। बौद्धिक के समय जब कोई सो जाती तो गोल-गोल हथेली को घुमाते हुए आपका कहना-'कैमरा इधर' और आपका बौद्धिक में सबको बाँध के रखना, हर कोई ऐसे रख ही नहीं सकता। बालिकाओं के मार्गदर्शन के लिए नये विषय खोजना, अखबारों की कटिंग से सच्चाई दिखलाना कि धर्म भाई और गुरुओं के जाल में फस मत जाना, आपके वे सबक सदैव याद रहेंगे। शिविरों में आपका स्वागत उद्‌बोधन और हर बार एक बात पर जोर डालना-'बायां डूब मत जायो।' तुम क्षत्राणी हो, पहचानो खुद को। तुम्हारी एक नजर से ही सामने वाले की हिम्मत न हो तुम्हें कुछ कहने की, ऐसी बनना। मत उलझो टी.वी. के मायाजाल में, वेलेन्टाइन-डे के जंजाल में, बर्थ-डे पार्टी के चक्रव्यूह में और इन सभी विषयों को प्रामाणिक तथ्यों के साथ, अखबार की कटिंग के साथ समझाना आपके सिवाय कौन कर सकता था।

मेरे हँसते हुए चेहरे के कारण आप जैसे मुझ पर हक समझते थे, गलती कोई और करती तो डाँटते मुझे फिर धीरे से कहते-तेरे अलावा दूसरों को डांटूं तो ये एक दिन में ही भाग जाएगी। चर्चा में कोई बोलती नहीं तो अंगूठा

दिखाते हुए पूछते–कहाँ गई वो? मैं लम्बी कम हूँ इसलिए आपका इशारा होता कि इसकी लम्बाई तरफ मत देखो, इसकी इस अच्छाई को देखो कि यह बोलती है, हर कार्यक्रम में लगन से भाग लेती है। रामायण चर्चा में तो मैं हमेशा आस–पास ही बैठती थी। कुछ चौपाइयाँ याद थी तो आपको लगता था कि मैं रामायण पढती हूँ और जब आपने एक बार यही कहा तो मैंने आपके विश्वास को हकीकत में बदलने के लिये रामायण पढना भी शुरू किया। पहले तो मैं पिताश्री के साथ टी.वी. पर रामायण सीरियल ही देखा करती थी। पढने लगी तो ऐसी लगन लगी कि धर्म ग्रन्थों को पढने और धर्म को समझने की चाह आज तक जारी है।

रामायण चर्चा में केवट प्रसंग की चर्चा और फिर– 'कभी–कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े' भजन गाया। ऐसा लगता जैसे आप यह भजन तो मेरी तरफ देख कर ही गा रहे हो और मैं एकटक आपके चेहरे पर हिलोरें लेते भावों के साथ आनन्द में डूब रही हूँ। क्या कभी कोई इससे अच्छा वातावरण बन पाएगा? गम्भीर से गम्भीर विषयों को बिना बोझिल बनाये समझाना क्या कोई और कर सकता है? गलती पर डाँट तो कोई सकता है पर माँ की तरह बाद में पुचकारना हर कोई नहीं कर सकता। बालिका शिविरों के प्राण और ऊर्जा दोनों आप थे। आपके सिवाय कोई और कभी बन पाएगा, शायद नहीं।

पिछली कुछ मुलाकातों में आपकी आँखों में आँसू, विवशता, संघ के प्रति समर्पण के सिवाय कुछ दिखा ही नहीं। संघ का नाम किसी के भी कारण खराब हो यह, आपको नागवारा था। जब संघ के हीरक जयन्ती समारोह का मेला था, उसके पूर्व आप शारीरिक रूप से आने में असक्षम थे, पर आपकी आत्मा को यह गवारा नहीं था, वह पीछे कैसे रह सकती थी इसलिए आपने उस निशक्त शरीर को ही त्याग दिया जिससे उस शरीर से जुड़े हुए क्रिया–कर्म भी पूरे हो जाएँ और आप समारोह में भी आ सकें।

आप तो आप ही थे। हमारा पूरा पैकेज थे। लाड लडाते, डाँटते, खेल खिलाते, पाठ पढाते, हँसते–हँसाते, सहगायन पर झूमते–नाचते, हमें गढ रहे थे, सुन्दर व उज्ज्वल भविष्य के लिये।

मुझसे मेरी पहचान करवाने वाले भी आप ही थे। बालिकाओं में आत्म विश्वास भरने की आप हर सम्भव कोशिश करते, उनकी अभिव्यक्ति को आप मंच देते, भावों को लेखनी देते, उनकी ऊर्जा को सही दिशा देते। मैं लिख भी सकती हूँ, यह आपने ही बाहर निकाला। पर आज मैं आपके बारे में भी नहीं लिख पा रही हूँ, मेरे अनुभवों को शब्द ही नहीं मिल रहे क्योंकि आप जो नहीं हो। आपको पता है, एक बार हिन्दी दिवस के अन्तर्कालेज सेमीनार में मेरी लेखनी की प्रशंसा और मेरे व्यक्तित्व को अलग पहचान भी आपके कारण ही मिली। मेरे अन्दर छुपे मस्तमौला बचपन को भी आपके साथ खेलने का आंगन मिला। कार्यक्रमों में आपका मेरी तरफ देखना भर मुझमें आत्मविश्वास का संसार कर देता। एक बार किसी गलतफहमी की वजह से मुझे लगा कि आप मुझसे नाराज हैं। वह दर्द बेट द्वारिका शिविर में तो निकला ही, उसके बाद जब आपसे फोन पर बात हुई और आपने कहा–'तेरे बिना शिविर में रौनक नहीं रहती' तो मैं क्या बताऊँ, मेरे अन्दर कितनी हलचल मचा गया। मैं कितना रोई, सारे गिलवे शिकायत बह गये और आज आप जब नहीं हो तो ये ही शब्द याद हैं बाकी सब तो अटक–सा गया है।

इतना कुछ देकर भी आपने हमसे सिर्फ विश्वास ही माँगा। आप और मेरी माँ तो अब ऊपर हो, शायद सब देख रहे हो, मैं आप दोनों को विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि कभी आपको लजाऊँगी नहीं। इससे ज्यादा मैं आपको कोई श्रद्धांजलि नहीं दे सकती। सही राह पर चलते रहने के लिये आप दोनों आशीर्वाद बनाए रखना।

आपके जीवन का हर क्षण, हर श्वास संघ को समर्पित था तो 'जय संघशक्ति', हमारे प्यारे, निराले बाबोसा रतनसिंहजी–'जय संघशक्ति'।

# दत्तानी युद्ध में पराजित हुई थी, मुगल सेना

– डॉ. उदयसिंह डिगार

**युद्ध की 439वीं वर्षगांठ पर विशेष आलेख –**

सिरोही जिलेवासियों के लिये 17 अक्टूबर का दिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिवस है, क्योंकि इस दिन आज से 439 वर्ष पूर्व सिरोही के महान शासक महाराव सुरताण देवड़ा ने 17 अक्टूबर, 1583 ईसवी को दत्तानी (तहसील रेवदर जिला सिरोही) के युद्ध में मुगल बादशाह अकबर की सेना को करारी शिकस्त दी थी, जो क्षेत्रवासियों के लिये गौरवपूर्ण इतिहास है। इस गौरवशाली विजय में महाराव सुरताण देवड़ा के सेनापति सभाभूषण ठाकुरराज समरसिंह देवड़ा (पाडीव) के अद्भुत बलिदान की भी अमर गाथा जुड़ी हुई है। उनके साथ शहीद हुए सैंकड़ों गुमनाम शहीदों की शहादत का दिवस भी है। तत्कालीन राष्ट्र कवि दुरसा आढा ने उनकी प्रशंसा में यह पंक्तियाँ कही थी–''**धर रावा जस डूंगरा, बद्र पोता शत्रुहाण। समरे मरण सुधारियो, चहु थाका चहुआण**'' उल्लेखनीय है कि सिरोही के महान स्वतंत्र शासक महाराव सुरताण देवड़ा द्वारा महाराणा प्रताप को संघर्ष के विकट समय एवं परिस्थितियों में आबू की दुर्गम पहाड़ियों में सुरक्षित रखकर महत्त्वपूर्ण सहायता की गई थी, वहीं मारवाड़ का 'भूला बिसरा नायक' (The Forgotten Hero of Marwar) के नाम से विख्यात राव चंद्रसेन के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान भी महत्त्वपूर्ण सहयोग कर स्वतंत्रता संघर्ष की ज्योति को जलाए रखने में ऐतिहासिक कार्य किया गया था। पंडित विश्वेश्वर रेऊ की पुस्तक मारवाड़ का इतिहास में महाराणा प्रताप व राव चंद्रसेन के स्वतंत्रता संघर्ष का इन पंक्तियों में बखान किया गया है–

**''असमर असव उजला, चाकर रेहण डगियो नी चित।**
**सारे हिन्दुस्तान तणै पाथल ने चंद्रसेन पवित।।''**

यह महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक वेदना है कि स्वतंत्रता संघर्ष के इन दोनों प्रसिद्ध शासकों महाराणा प्रताप एवं राव चंद्रसेन का अपूर्व सहयोग करने वाले एवं मुगल सेना को करारी शिकस्त देने वाले स्वतंत्रता के अमर प्रतीक महाराव सुरताण देवड़ा को इतिहासकारों ने उचित स्थान नहीं दिया जबकि राष्ट्र कवि दुरसा आढा द्वारा इन ऐतिहासिक पंक्तियों में उन्हें महाराणा प्रताप के समकक्ष स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा दिया गया है–

**''अवरनृप पतशाह अगै, होय भृत जोड़े हाथ।**
**नाथ उदयपुर नी नमीयौ, नमीयौ नी अरबुद नाथ।।''**

आज दत्ताणी युद्ध का विजय स्थल स्वतंत्रता संघर्ष के अमर इतिहास की गौरवगाथा अपने आंचल में समेटे हुए मौन एवं विरान पड़ा है, जहाँ पर विजय स्मारक बनाए जाने की आवश्यकता है। वहीं अमर स्वतंत्रता के प्रतीक महाराव सुरताण देवड़ा की प्रतिमा सिरोही में स्थापित कर इतिहास गौरव को नमन करने की पुकार है।

●

हर कोई जब छाती में बहुत से सपने और माथे में बहुत से खयाल डालकर घर से जिन्दगी खरीदने निकलता है, और जिन्दगी के बाजार में जिन्दगी की कीमत सुनता है, तो उसकी छाती में खनकते सब सिक्के बेकार हो जाते हैं।

**– अमृता प्रीतम**

# मृत्युभोज

– भागीरथ सिंह लूणोल

इंसान स्वार्थ व खाने के लालच में कितना गिरता है उसका नमूना है सामाजिक कुरीतियाँ। ऐसी ही एक कुरीति अपने समाज में फैलाई गई, वह है–**मृत्युभोज**।

मृत्यु भोज से ऊर्जा नष्ट होती है महाभारत अनुशासन पर्व में लिखा है कि मृत्यु भोज खाने वालों की ऊर्जा नष्ट हो जाती है। जिस परिवार में मृत्यु जैसी विपदा आई हो उसके साथ इस संकट की घड़ी में जरूर खड़े हों और तन,मन,धन से सहयोग करें लेकिन बारहवीं या तेरहवीं पर मृतक भोज का पुरजोर बहिष्कार करें। महाभारत का युद्ध होने को था, अत: श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के घर जाकर युद्ध न करने के लिये सन्धि करने का आग्रह किया। दुर्योधन द्वारा आग्रह ठुकराया जाने पर श्रीकृष्ण को कष्ट हुआ और वह चल पड़े तो दुर्योधन द्वारा श्रीकृष्ण से भोजन करने के आग्रह पर श्रीकृष्ण ने कहा कि–

**'सम्प्रीति भोज्यानि आपदा भोज्यानि वा पुनै'**

अर्थात् जब खिलाने वाले का मन प्रसन्न हो, खाने वाले का मन प्रसन्न हो, तभी भोजन करना चाहिए। लेकिन जब खिलाने वाले और खाने वाले के दिल में दर्द हो, वेदना हो तो ऐसी स्थिति में कदापि भोजन नहीं करना चाहिए।

हिन्दू धर्म में मुख्य सोलह संस्कार बनाए गए हैं, जिसमें प्रथम संस्कार गर्भाधान एवं अन्तिम 16वां संस्कार अन्त्येष्टि है इस प्रकार जब 17वां संस्कार बनाया ही नहीं गया है तो 17वाँ संस्कार मृत्युभोज कहाँ से आ टपका।

किसी भी धर्म ग्रन्थ में मृत्युभोज का विधान नहीं है। लेकिन हमारे समाज का तो ईश्वर ही मालिक है। जिस भोजन बनाने का कृत्य रो रोकर हो रहा हो जैसे लकड़ी फाड़ी जाती हो तो रोकर, आटा गूंथा जाता हो रोकर एवं पूड़ी बनाई जाती हो तो रो–रोकर यानी हर कृत्य आँसुओं से भीगा हुआ। ऐसे आँसुओं से भीगे निकृष्ट भोजन अर्थात् बारहवीं या तेरहवीं के भोज का पूर्णरूपेण बहिष्कार कर समाज को एक सही दिशा दें। जानवरों से सीखें, जिसका साथी बिछुड़ जाने पर उस दिन चारा नहीं खाता है, जबकि 84 योनियों में श्रेष्ठ मानव जवान आदमी की मृत्यु पर हलवा पूड़ी पकवान खाकर शोक मनाने का ढोंग रचता है, इससे बढकर निंदनीय कोई दूसरा कृत्य हो ही नहीं सकता।

यह कैसा मृत्यु भोज?? हालात पर नजर डालें तो आज वाकई में यह बड़ी बुराई बन चुका है। अपनों को खोने का दर्द है ऊपर से तेरहवीं का भारी भरकम खर्च? मानव विकास के रास्ते में यह कुरीति कैसे फैल गई समझ से परे है। जानवर भी किसी अपने साथी के चले जाने पर सब मिलकर वियोग जाहिर करते हैं, परन्तु यहाँ किसी व्यक्ति के मरने पर उसके साथी, सगे–संबंधी भोज करते हैं, मिठाईयाँ खाते हैं। इस शर्मनाक कुरीति को मानवता की किस श्रेणी में रखें? आसपास के कई गाँवों से ट्रैक्टर–ट्रॉलियों में गिद्धों की भाँति जनता इस घृणित भोजन पर टूट पड़ती है। यहाँ तक शिक्षित व्यक्ति भी इस जाहिल कार्य में पीछे नहीं रहते। पहले परम्परा अलग थी कि संसाधन के अभाव में दूर से आने वालों को भोजन कराना होता था, जिसे भी तब अतिथि सत्कार नाम दिया था लेकिन वर्तमान समय में हालात बदल गए हैं। मृत्यु भोज के लिये 1 से 2 लाख तक का साधारण इंतजाम करने का दर्द, ऐसा ना करो तो समाज में इज्जत ना बचे। क्या गजब पैमाने बनाए हैं, हमने इज्जत के?

कहीं-कहीं पर तो इस अवसर पर अफीम की मनुहार भी करनी पड़ती है, इसका खर्च लगभग मृत्युभोज के भोजन के बराबर ही पड़ता है। बड़े-बड़े लोग इस अफीम का आनंद लेकर कानून का खुला मजाक उड़ाते हैं।

बर्बादी का नंगा नाच, जिस देश में चल रहा हो, वहाँ पर पूंजी कहाँ बचेगी, उत्पादन कैसे बढेगा, बच्चे कैसे पढेंगे? आप आश्चर्य करेंगे, शहीदों तक को नहीं बख्शा जाता है। अब सोचिए वह परिवार क्या बालिका शिक्षा की सोचेगा जो ऐसी कुरीतियों के कारण कर्जे में डूब गया है। फिर वो मजबूरी में बाल विवाह करता है।

कोरोना काल में लॉकडाउन अच्छा रहा जिससे छूटा रहा इस कुप्रथा का साथ, तो क्यों न मृत्यु भोज सदा के लिए बंद कर दें। राजस्थान मृत्यु भोज निवारण अधिनियम 1960 के तहत किसी की मृत्यु के बाद अगर मृत्यु भोज कराया जाता है तो दोषी को जेल की सजा काटनी पड़ सकती है, मृत्युभोज की सूचना देना सरपंच और पटवारी का दायित्व है नहीं तो उन पर भी गाज गिर सकती है।

ऐसे आँसुओं से भीगे निकृष्ट भोजन एवं तेरहवीं भोज का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर समाज को एक नई दिशा दें। यह मृत्यु भोज समाज के लिये एक अभिशाप है। अत: हम सब का परम कर्तव्य है कि अधिक से अधिक लोगों को समझाएँ और मृत्यु भोज निवारण अधिनियम 1960 का कड़ाई से पालन करवाएँ। इस कुरीति को मिटाने हेतु निश्चय करें कि इस प्रकार के आयोजन अब कभी नहीं करेंगे और ना करने देंगे।

**आओ हम सब मिलकर इस कुरीति को जड़ से खत्म करें।, सोच बदलें, समाज बदलें, हम सुधरेंगे तो समाज सुधरेगा।।**

# हिसाब बराबर

एक बड़े परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ। वह बच्चा जन्म से ही रुग्ण था। जन्म से ही उसका इलाज शुरू हो गया। वह धनाढ्य परिवार था और उस व्यक्ति के वह इकलौता पुत्र था। इसलिए इलाज में किसी प्रकार की कमी नहीं रखी गई। बच्चा जब चार वर्ष का हो गया था और बोलने लग गया था। परन्तु हाथ-पाँव से वह लगभग विकलांग ही था। एक दिन बिस्तर पर लेटे उस बच्चे के सामने उसके पिता और माता सहित परिवार के अन्य सदस्य भी बैठे थे।वह बच्चा जोर से हंसा। परिवार के सदस्य चौंक पड़े क्योंकि आज पहली बार प्रसन्नता से वह बच्चा हँसा था। पिता ने पूछा,-'बेटा तुम क्यों हंसे?' बच्चे ने कहा,-'इसलिए कि आज मेरा हिसाब बराबर हो गया।' पिता बुरी तरह घबरा गए। बच्चे ने पहली बार आज इस तरह की बात की थी। पिता ने पूछा,-'कौनसा हिसाब?' बच्चे ने कहा,-'लेने वाला अक्सर भूल जता है लेकिन देने वाला याद रखता है। आप भूल गए लेकिन मैं एक क्षण भी आपका कपट नहीं भूला। मैं व्यापार में आपका हिस्सेदार था। बराबर का हिस्सेदार। लेकिन आपने बड़ी चालाकी से एक दिन सारे व्यापार पर कब्जा कर मुझे बेदखल कर दिया। मेरे डेढ लाख रुपए आपने दबा लिए। मैं कुछ नहीं कर सका पर आपका इतना बड़ा धोखा और छल मैं भूल नहीं सका। इस जन्म में न सही, अगले जन्म में मैं अपना हिसाब ले लूंगा, यह मेरा पक्का विचार था। मृत्यु के बाद मैंने आपके घर जन्म लिया। आप अस्पताल का, डॉक्टर का और दवाओं का बिल आज तक का जोड़कर देख लीजिए। सिर्फ डेढ लाख रुपए मैंने आपसे वसूले हैं। हिसाब बराबर, नमस्कार। इतना कहकर उस बच्चे ने अन्तिम साँस ली।

# विचार सरिता

## (अष्टसप्तति लहरी)

– विचारक

जिस सत् रूप परमात्मा की अनुभूति हेतु हम नाना प्रकार के उपाय, उपासना, पूजा, गुरु–धारणा आदि शास्त्रों में सुझाये गये साधनों का विधिवत अनुसरण करते हैं फिर भी हमें वर्षों की साधना के उपरान्त भी उस सच्चिदानन्द परमात्मा की यथार्थ अनुभूति नहीं हुई। इसका सबसे बड़ा कारण तो यह रहा कि हमने हमारे भीतर के परमात्मा के अभाव को मान्यता दे दी और हम उस परमसत्ता को बाहर खोजने लग गए। दूसरा कारण यह रहा कि उस चिन्मय परमात्मा को पाने के लिये साधनों का उपयोग शुरू कर दिया।हाँ यह सत्य है कि परमात्मा बाहर भी विद्यमान है, वहाँ उस चेतन तत्व का अभाव नहीं है पर अनुभूति का साधन हमने हमारी बुद्धि को मान लिया और जैसे प्राकृत वस्तुओं को ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा देखना चाहते हैं वैसे ही हम परमात्मा को भी इन चर्मचक्षुओं से देखना चाहते हैं।

परमात्मा क्रियासाध्य नहीं है और न ही करण–साध्य है। वह तो सबसे सुगम और नित्यप्राप्त है। जो नित्यप्राप्त है उसकी अप्राप्ति की मान्यता ही हमें भटका रही है। प्रभुप्राप्ति की अनुभूति का कार्य सबसे सुगम है केवल प्रभुप्रेम के विरह की जरूरत है। परपुरुष से मिलने की कामना जैसे कुल्टा स्त्री को पागल बना देती है। भय, लज्जा और घृणा से ऊपर उठकर वह उसके प्रेम में दीवानी हो जाती है तो उसे रोकने की शक्ति न सरकार में है और न समाज में है। वह ऐन केन प्रकारेण उस पुरुष को पा ही लेती है। ऐसी विरह की अग्नि जब हमारे हृदय में भी जग जाती है तो परमात्मा स्वयं मिलने को आतुर हो जाते हैं। हमारे भीतर एक बात जँची हुई है कि कुछ ध्यान, समाधि आदि कुछ साधन करेंगे और वे फलदायी होंगे तब हमें परमात्मा मिलेंगे। इस मिलन को दुस्तर भी मान रखा है, साथ ही साथ यह भी जाँच रखा है कि यह काम जल्दी नहीं होता, देरी लगती है। परमात्मतत्व के लिये भविष्य की आशा बहुत ही घातक है। भविष्य की आशा उस वस्तु के लिये होती है जो कर्मजन्य हो, जिससे देश–काल की दूरी हो। परन्तु जो सब देश, काल, वस्तु, परिस्थिति, अवस्था आदि में पूर्ण रूप से विराजमान हो, उसके लिये भविष्य नहीं होता। उसमें तो 'अभी' ही होता है।

परमात्मा की मौजूदगी का सबसे सुगम अनुभव यह है कि जब हम हमारे विवेक द्वारा यह बोध करते हैं कि यह संसार असार है, अनित्य व असत् है। ऐसा विचार जब हमारा दृढ़ हो जाता है तो हम यह विचार करें कि यह असत् का ज्ञान किसके द्वारा हुआ। असत् का ज्ञान असत् से तो हो नहीं सकता। जड़ का ज्ञान जड़ पदार्थ मन, बुद्धि से भी नहीं हो सकता। सिद्धान्त यह कहता है कि असत् का ज्ञान व असत् की जानकारी सत् के बिना हो ही नहीं सकती। इसलिए यह समझना है कि असत् का जो बोध हुआ, जानकारी हुई वह हमारे सत् स्वरूप परमात्मा के बिना नहीं हुई। इस निश्चय को खूब दृढ़ बना लो और यह अनुभूति करो कि वह सत्स्वरूप परमात्मा कितना सुगम और नजदीक भी है।

यह सौ टका सच्ची बात है कि अविनाशी परमात्मा है इसीलिए तो विनाशी की प्रतीति हो रही है। सत्य के आधार ही असत्य का बोध हो रहा है। हमारी अज्ञानदशा के कारण हम विनाशी को तो पकड़ लेते हैं, उसे सत्य मान लेते हैं पर जो अविनाशी तत्व है वहाँ

तक हमारी पहुँच होती ही नहीं इसलिए हम संसार में दु:खी हो रहे हैं। रज्जू के बिना सर्प की प्रतीति हो ही नहीं सकती और रज्जू के ज्ञान होने पर मिथ्या सर्प टिकता ही नहीं। इसी प्रकार एक जगत् का अधिष्ठान ब्रह्म ही सत् है उसके आसरे जो देह-प्रपञ्च भासित हो रहा है वह सत् रूप इसलिए भासित हो रहा है कि इसका अधिष्ठान सत्‌रूप है। असत्य तभी असत्य प्रतीत होगा जब आप सत्य में स्थित होते हैं। सत्य में आपकी स्थिति स्वत:सिद्धि है, बस उसी में डटे रहो।

बस यह बात पक्की हो जाये कि असत्य का बोध करने वाला सत्य है और वो आप से भिन्न नहीं वो आपका स्वरूप है। ऐसा निश्चय हमारा सदैव बना रहना चाहिए। यदि कोई पूछे कि सब कुछ दीखता है, पर आँख नहीं दिखती? तो इसका सीधा साधा यही उत्तर है कि जिससे सब कुछ दीखता है, उसी का नाम आँख है। आँख को कैसे देखा जाए कि यह आँख है। दर्पण में देखने पर भी जो आँख का गोलक है वह तो दीखता है पर जो देखने की शक्ति है वह दर्पण में भी नहीं दीखती। इससे यह सिद्ध होता है कि देखने, सुनने, पढ़ने, विचार करने से जो हमको ज्ञान होता है, वह ज्ञान जिससे होता है वही आपका सत्‌स्वरूप है। वही सबका प्रकाशक और आधार है। वही ज्ञान-स्वरूप है, वही चेतन स्वरूप है, वही अमृतस्वरूप और आनन्द-स्वरूप है। मानस में बहुत सुन्दर बात आई है-

**जासु सत्यता तें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया।।**

अर्थात् जिसकी सत्यता से यह जड़ माया मूढ़ता के कारण सत्य की तरह दीखती है, वही सत्य है। स्थूल दृष्टान्त लेते हैं कि जैसे चने के आटे की बूंदी बनाते हैं तब वह बिल्कुल फीकी होती है पर जब उसे चीनी की चासनी में डालते हैं तो वह फीका आटा भी मीठा हो जाता है। यह बूंदी में जो मिठास है वह बूंदी का नहीं है वह मिठास तो चीनी का है। उन मीठी बूंदियों को थोड़ी देर मुँह में रखकर चूसते जाओ तो वे बिल्कुल फीकी हो जावेगी। क्योंकि वह तो फीकी ही थी। यह उस चीनी की ही करामात है कि जो फीके को भी मीठा करके दिखा दे वह स्वयं तो मीठा होगा ही। उसे किसी अन्य मिठास की आवश्यकता नहीं। ऐसे ही जो असत्य को भी सत्य की तरह दिखा दे, वह सत्य है ही।

प्रकाश और अन्धकार इन दोनों का जिससे ज्ञान होता है, वह अलुप्त प्रकाश है अर्थात् ऐसा प्रकाश जो कभी लुप्त होता ही नहीं। वह क्रियाओं को, अक्रियाओं को, जाग्रत-स्वप्न-सुषोप्ति को, संपूर्ण अवस्थाओं को प्रकाशित करता है। संपूर्ण अवस्थाएँ जिससे जानी जाती हैं वो आप अपना आप हो। साधक का यह कर्तव्य बनता है कि वह उसी में हरदम स्थित रहे, उससे नीचे उतरे ही नहीं तो उसका कल्याण निश्चित है। इसी का नाम जीवनमुक्त अवस्था है। इसी को मोक्ष कहा गया है। निशिदिन ऐसी स्थिति में जो हरिजन रहते हैं, उनकी उस प्रज्ञा को मेरा साष्टांग प्रणाम!

**शिवोहं! शिवोहं!! शिवोहं!!!**

कभी-कभी हमें राह पड़े हुए पत्थर को गले में बाँधकर ही अहंकार हो जाता है, कि हमारे गले में हीरा है। पर हीरा उन पत्थरों की भाँति नहीं होता जो राह में ठोकरे खाता फिरे, यह वह पत्थर है जो भीषण ताप को सहन कर तपस्वी बनता है और अपनी तेजस्विता के कारण ही जहाँ जाता है स्मृद्धि व श्री की वर्षा करता है।

**- पू. तनसिंहजी**

# कहानी एक क्षत्राणी के सुहाग की

– सुरेन्द्रसिंह महलाना उतरादा

आज पूरे गाँव में चहल-पहल थी। बच्चे बुढ़े, पुरुष-स्त्रियाँ लड़के-लड़कियाँ जो भी गाँव में नजर आ रहा था, सजा संवरा था। यही नहीं पूरा गाँव ही दुल्हन की तरह सजाया हुआ था। गाँव में मौजूद सभी के चेहरों से ऐसा लग रहा था कि प्रत्येक को किसी का इन्तजार सता रहा है। ऐसा लग रहा था कि सबकी आँखें किसी की राह देखते-देखते थकान महसूस कर रही थी।

तभी कहीं दूर से बन्दूकों के दनदनाने की आवाजें सुनाई पड़ी और सुनने वाले प्रत्येक ग्रामवासी की आँखें चमक उठी। वह मारे खुशी के अन्दर ही अन्दर झूम उठा और एक दूसरे को यह बताने का सिलसिला शुरू हुआ कि बारात गाँव की सीमा में प्रवेश कर चुकी है।

शहनाई बज रही थी। घोड़ों और हाथियों को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था। उन पर बहुत ही सुन्दर रजपूती पौशाकें पहने और हथियारों से सुसज्जित राजपूत सरदार और युवक विराजमान थे। पूरा काफिला बड़े ही सुन्दर और व्यवस्थित ढंग से चल रहा था। उन सब के बीच दुर्गासिंह हाथी के होदे पर शोभायमान थे। उनका जरी का साफा चमक रहा था, चुस्त पायजामा और अचकन पहन रखी थी। कमर में तलवार लटक रही थी, पैरों में सोने का कड़ा और कंगण डोरा बंधा हुआ था। दुर्गासिंह बहुत ही खुश नजर आ रहे थे। उनकी खुशी उनकी सुन्दरता में चार चाँद लगा रही थी। उनके चेहरे पर विजयी मुस्कान थी। हाँ यही है युवा ठाकुर दुर्गासिंह जो शादी करके अपनी बारात और नवोढ़ा पत्नी सहित वापस अपने गाँव लौट रहे हैं। गाँव में मौजूद सभी गाँव वालों को इसी बारात के साथ इन्तजार है इस नयी नवेली दुल्हन का। सभी ने उनकी सुन्दरता और बहादुरी की काफी चर्चाएँ सुनी हैं लेकिन आज सभी उनकी एक झलक तक पाने के लिये आतुर हैं।

दुर्गासिंह के पीछे-पीछे सजा हुआ रथ आ रहा था जिसमें उनकी नव विवाहिता पत्नी सपने संजोये बैठी थी। वह रथ के झीने पर्दे से हाथी पर चढे अपने राजा को निहार रही थी। कितना सुन्दर है उसका अपना राजा? हृष्ट-पुष्ट शरीर, गोरा सुन्दर चेहरा, मोटी मोटी आँखें। वह मन ही मन अपनी किस्मत को धन्यवाद दे रही थी। उधर हाथी पर सवार दुर्गासिंह के मन में भी विचारों की उथल-पुथल मची हुई थी। उन्होंने उसके रूप यौवन, सुन्दरता और वीरता केअनेक किस्से सुने थे। आज यह रूपवती उसकी अपनी बन गई है ये घड़ियाँ मेरे लिये स्वर्ग सुख से भी बढ़कर हैं। यह सोचते-सोचते दुर्गासिंह का गाँव आ गया।

बन्दूकें फिर दनदना उठी। बंदूकें चलने की आवाजें यह संकेत दे रही थी कि दुर्गासिंह शादी करके वापस गाँव पहुँच रहे हैं।

ज्यों ही दुर्गासिंह ने घर में प्रवेश किया सामाजिक और शाही रीति-रिवाज के अनुसार आँगन के प्रथम द्वार पर पुरोहित मंत्रोच्चारण कर रहा था, गठजोड़े के साथ तिलक का शुभ शकुन कर दुर्गासिंह रावले पधार गये। पूरे रावले में चहल-पहल नजर आ रही थी।

दुर्गासिंह अभी रावले पधारे ही थे कि कुछ ही क्षणों बाद रावले की सेविका (दासी) उनके पास आयी ''ठाकुर साहब की जय हो! राजदरबार का दूत आया है, आपसे मिलना चाहता है।''

''उसे आदर सहित बैठाओ, मैं अभी आता हूँ।''

''हुकम साहब'' कहकर सेविका ने रावले के बाहर जाकर सेवक को सूचना दी।

सेवक ने दूत को दीवानखाने (गेस्ट रूम) में बैठाया। थोड़ी देर बाद दुर्गासिंह ज्यों ही दूत के पास पहुँचे, दूत ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया और सम्मान सहित एक पत्र दुर्गासिंह के हाथ में थमा दिया।

दुर्गासिंह ने पत्र खोला और पढने लगे, विधर्मी बादशाह अपनी फौज के साथ देशद्रोहियों की फौज लेकर हमारे धर्म, हमारे राज्य और हमारे खानदान को कुचलने के लिये हमारी मातृभूमि की तरफ चढ़ाई कर रहा है। वह हमारे धर्म और हमारी संस्कृति को नष्ट करके हमारी मातृभूमि पर इस्लाम का झण्डा फहराना चाहता है। आज मातृभूमि के सभी क्षत्रिय आन और बान पर मिटने के लिये तैयार खड़े हैं, सबका खून उबल रहा है। सभी राजपूती तलवारें मुगलों और देशद्रोहियों का खून पीने के लिये उतावली हो रही हैं। सभी बहादुरों ने मुगल सेना का मार्ग रोकने के लिये चढ़ाई कर दी है। हम आज बादशाह को क्षत्रिय धर्म और हिन्दुआणी चोटी का परिचय देना चाहते हैं अगर आप भी इस पुण्य कार्य में अपा हाथ बंटाना चाहते हैं तो तुरन्त ही रणभूमि में पधारिये और अगर क्षत्रिय कुल पर बट्टा लगाना चाहते हैं तो आपकी मर्जी। हम तो अपनी आन पर मर मिटने के लिये चढ़ाई कर चुके हैं।

पत्र पढ़ते ही युवा ठाकुर का खून उबल उठा। आज तक सुनी बहादुरों की कहानियाँ एक-एक करके मस्तिष्क के सामने आने लगी।

मस्तिष्क में विलासिता और कर्तव्य दोनों का अन्तर्दन्द्व शुरू हो गया।

विलासिता बोली-मेरे युवा ठाकुर! अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है तुमने क्या देखा है? युद्ध में मरने वाले मूर्ख होते हैं। यह मानव जीवन बार-बार नहीं मिलता, क्यों इसको अपने हाथों बर्बाद कर रहा है। इसका सुख भोग, देखते नहीं चाँद से मुख वाली, हिरन सी आँखों वाली सजी-संवरी तुम्हारी नवोढ़ा पत्नी महल में तुम्हारा इन्तजार कर रही है। ऐसी सुन्दरी के मुख की एक झलक पाने के लिये लोग तरसते हैं। जानते नहीं आज तुम्हारी सुहागरात है। आज तक तो तुमने उसकी सुन्दरता के किस्से ही सुने थे, आज ही वह क्षण है जिसका तुम्हें काफी समय से इन्तजार था। अभी तो तुम्हारे कंगण डोरे भी नहीं खुले हैं, प्रथम मिलन की प्रथम रात्रि तुम्हारा इन्तजार कर रही है। ऐसे रंगीले क्षणों को छोड़कर युद्ध में मरना कैसी बहादुरी है? चलो महलों की ओर......।

कर्तव्य बोल उठा-बहादुर! यह सोचने का समय नहीं है। अगर कुल को बट्टा लग गया तो तुम्हें जीते जी मरना होगा। तू क्षत्रिय है, विलासिता को ठोकर मार और अपने कर्तव्य पथ पर बढते हुए युद्ध क्षेत्र में चल।

क्या तुमने अपने पूर्वजों की बहादुरी की कहानियाँ नहीं सुनी हैं, क्या तुम्हारी नसों में उनका खून नहीं दौड़ रहा है, क्या तुम अपने पूर्वजों की बहादुरी की कहानियाँ सुनकर सिर उठाकर नहीं चलते, अगर वे भी तुम्हारी तरह कायर होते तो क्या तुम आज सिर उठाकर चल सकते थे? अगर तुम युद्ध क्षेत्र में नहीं गये तो तुम्हारी सन्तान कायर की औलाद कही जाएगी, उनको स्वयं को क्षत्रिय कहते शर्म आयेगी। विलासिता को ठुकराओ, युद्ध भूमि में जाओ और दुश्मन को बता दो कि तुम एक क्षत्रिय की सन्तान हो।

दुर्गासिंह की नसों में वीरता का खून दौड़ने लगा और उन्होंने तुरन्त पत्र का जवाब लिख डाला-''मैं एक क्षत्रिय हूँ, मातृभूमि और धर्म के लिये लड़ना ही मेरा कर्तव्य है। मैं आपको वचन देता हूँ कि यह क्षत्रिय अपनी मातृभूमि के लिये मर मिटने के लिये आपको रणभूमि में तैयार मिलेगा।''

दुर्गासिंह ने पत्र दूत के हाथों में थमा दिया। दूत

पत्र लेकर तुरन्त घोड़े पर चढ़कर हवा से बातें करता नजर आया।

दुर्गासिंह ने राजदरबार का आदेश सारी सेना को सुनाया और युद्ध के लिये तैयार होने का आदेश दिया।

दुर्गासिंह स्वयं शस्त्रशाला में गये, युद्ध कवच पहने कमर में तलवारें बाँधी और युद्ध भेष में सज गये।

इसी बीच अचानक दुर्गासिंह का चेहरा कुछ उदास होने लगा। मन में विचारों की गाड़ी–द्रुतगति से दौड़ने लगी–तुम आज ही शादी करके लौटे हो, आज की रात तुम्हारी बहुप्रतिक्षित पत्नी से मिलन की प्रथम रात है, हाँ आज तुम्हारी सुहागरात है, अभी तक तो तुमने अपनी पत्नी का मुख भी नहीं देखा है, तुमने उसकी सुन्दरता की कितनी चर्चाएँ सुनी है, आज की रात उस सुन्दरता को निहारने की रात है और तुम जा रहे हो बेमौत मरने युद्ध क्षेत्र में।

इसी बीच विचारों का तांता टूटा। दुर्गासिंह सोचने लगा कहाँ से आ गई मुझमें ऐसी कायरता? मैं अपने कुल पर बट्टा नहीं लगने दूंगा, मैं अपना क्षत्रिय धर्म निभाऊँगा, युद्ध में जरूर जाऊँगा। मगर जाने से पहले एक बार पत्नी के दर्शन तो कर लूँ, मगर वह मुझे रोकेगी तो नहीं? नहीं वह मुझे नहीं रोकेगी वह रूपवती ही नहीं वीरांगना भी है। मैंने उसकी सुन्दरता के अलावा उसकी वीरता के भी कई किस्से सुने हैं। अगर वह वाकई वीरांगना है तो मुझे नहीं रोकेगी। सोचते सोचते दुर्गासिंह अपनी रूपवती रानी के महल की ओर बढ़ गये।

ज्यों ही दुर्गासिंह ने महल में प्रवेश किया रानी झट से पलंग से खड़ी हो गई और अपने पति के चरण स्पर्श किये तथा शरमाती हुई एक ओर खड़ी हो गई।

दुर्गासिंह ने बात शुरू की–''रानी! राजदरबार का दूत अभी समाचार देकर गया है कि मुगल बादशाह इस्लाम का झण्डा फहराने और हमारे धर्म और आदर्शों को नष्ट करने के लिये, अपनी सेना लेकर हमारी मातृभूमि की तरफ चढ़ आया है, मुझे भी युद्ध के लिये निमंत्रण मिला है। बोलो! तुम्हारी क्या मर्जी है?''

यह सनते ही रानी को ऐसा लगा जैसे कि किसी ने उसके दिल पर बहुत जोर से नुकीला पत्थर दे मारा हो। रानी का चेहरा एकदम बदल गया। कुछ क्षण पहले चेहरे पर जो शर्म थी वह एकदम गायब हो गई वह पति के चरणों में गिर पड़ी और बोली–

''हे प्राणनाथ! आपने मुझे कैसे दो रास्तों के बीच लाकर खड़ा कर दिया है। एक रास्ता धर्म का है जो स्वर्ग को जाता है। दूसरा रास्ता अधर्म का है जो नरक में जाता है। अगर मैं आपको रोकूंगी तो कायर कहलाऊँगी और क्षत्रिय धर्म पर कलंक बन जाऊँगी। हे नाथ! मैं क्षत्राणी हूँ मेरी रगों में अपने पूर्वजों की वीरता का खून है। मैं आपको नहीं रोकूंगी, मैं क्षत्रिय धर्म पर कलंक नहीं बनूंगी। आप रणभूमि में जाइये और दुश्मन को ऐसा सबक सिखाइये कि वह तो क्या फिर कभी कोई दूसरा दुश्मन भी इस जन्मभूमि की तरफ आँख उठाने की भी हिम्मत न कर सके। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगी कि आप दुश्मन को खत्म करके लौटें तब हम सुहाग मनायेंगे?''

''परन्तु युद्ध भयंकर होगा वापसी की आशा बेकार है।'' ''कोई बात नहीं आप अपने धर्म का पालन करते हुए बहादुरी से रण में लड़िये। अगर आप लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये तो भी यह जीवन–संगीनी आपका साथ नहीं छोड़ेगी, स्वर्ग में अपना पुनर्मिलन होगा। आप देर मत करो जल्दी जाओ और अपना क्षत्रिय धर्म निभाओ। मेरी चिन्ता बिल्कुल मत करना।''

''तुम्हें बहुत–बहुत धन्यवाद! मुझे गर्व है तुम जैसी वीरांगना को पत्नी के रूप में पाकर। हे बहादुर क्षत्राणी! मुझे तुरन्त विदा करो मेरी तलवारें दुश्मन का खून पीने के लिये उतावली हो रही हैं।''

दुर्गासिंह उस वीरांगना से विदा होकर दुगुने उत्साह के साथ महल से बाहर आये, जहाँ युद्ध के लिये सजी सेना अपने युवा ठाकुर का इन्तजार कर रही थी।

दुर्गासिंह सजे घोड़े पर सवार हुए और अपनी सेना को सम्बोधित करते हुए बोले–''जो क्षत्रिय अपनी आन, बान, शान पर मिटना चाहता है, जिसकी रगों में रजपूती खून दौड़ रहा है, जो शेरों की सन्तान है वे मेरे साथ आ जाओ। जिसे अपनी मातृभूमि से प्यार नहीं है जो क्षत्रिय कुल पर बट्टा लगाना चाहता है, जो गन्दे खून की कमजोर औलाद है, वह अभी लौट जाये और मुझे मुँह न दिखाये।''

सभी तरफ से आवाजें आयी–''हम क्षत्रिय हैं, हम शेरों की सन्तान हैं, हम मातृभूमि के लिये मर-मिटेंगे लेकिन हटेंगे नहीं।''

''तो आओ मेरे साथ, समय बहुत कम है।'' ''हर हर महादेव'' ''जय माँ भवानी'' के शब्दोच्चारण के साथ आगे-आगे दुर्गासिंह और पीछे सेना जय-जयकार करती हुई युद्ध क्षेत्र की ओर बढ़ने लगी।

घमासान युद्ध शुरू हुआ। दुर्गासिंह के सैनिक बड़ी बहादुरी के साथ दुश्मनों का सफाया कर रहे थे। दुर्गासिंह तो आज वास्तव में नाम के अनुरूप ही माँ दुर्गा के सिंह जैसा विकराल रूप धारण किये थे। जिस प्रकार माँ दुर्गा के सिंह ने राक्षसों की सेना को चीर फाड़ डाला था उसी प्रकार दुर्गासिंह भी अपने दुश्मनों को तलवार से गाजर-मूली की तरह चीरते-फाड़ते हुए आगे बढ़ रहे थे। आखिर उस सिंह को दुश्मनों के एक बड़े झुण्ड ने घेर लिया और वह सिंह उनसे लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

युद्ध में क्षत्रियों की विजय हुई जिसमें इस वीर का महान योगदान रहा।

पत्नी को जब पति के वीरगति होने का समाचार मिला तो मुख से निकल पड़ा, ''मेरे पति ने मेरे धर्म, मेरी मातृभूमि और मेरे चूड़े की लाज रखी है, मैं अपना वादा निभाऊँगी। युद्ध में उनकी विजय हुई है, आज हम स्वर्ग में सुहाग बनायेंगे।''

वह युद्ध भूमि में गई। अपने पति के शव को गोद में लेकर परम्परागत रीति से चल पड़ी स्वर्ग की ओर। चारों तरफ खड़ी भीड़ में से प्रत्येक के चेहरे से ऐसा लग रहा था मानो वह कह रहा हो कि ''बहादुर अपना सुहाग युद्धभूमि में ही मनाते हैं।'' ●

---

**जिनके कुल की कुल ललनाएँ कुल का मान बढाती,**
**अपने कुल की लाज बचाने लपटों में जल जाती,**
**यश अपयश समझाती।**

**कितने मंदिर कितने तीरथ देते यही गवाही,**
**गठजोड़ों को काट चले थे बजती रही शहनाई,**
**सतियाँ स्वर्ग सिधाई।**

**वो कौम न मिटने पायेगी**
**ठोकर लगाने पर हर बार उठती जायेगी।**

# बीते तीन साल बहुत कुछ समझा गये

– गोवर्धनदास (बिन्नाणी)

वैसे तो बीते वर्ष 2020 से 2022 तक हमने मानसिक तनाव बहुत झेला है। यह मानसिक कष्ट अनेक कारणों से रहा, जिसमें प्रमुख रहा चीन पाकिस्तान के साथ युद्ध का भय व कोरोना महामारी व महामारी के बाद वाले प्रभाव। परन्तु हम सभी यह भी जानते हैं कि हमारी सरकार ने चीन व पाकिस्तान दोनों पर अपना दबदबा बनाये रखा और कोरोना महामारी पर बहुत हद तक काबू भी पाने में सफल रही। यही सभी कारण रहे हैं कि जिसके चलते बीते तीन साल हमें बहुत कुछ सिखा के भी गये हैं और उस शिक्षा ने हमारी सोच व कार्य पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है। अब हम उस पर ही यहाँ संक्षेप में चर्चा करते हैं-

1. कोरोना काल वाले समय से आज तक हमने सीमित संसाधनों में भी कैसे जी सकते हैं, सीखा।
2. कोरोना काल वाले समय में हमने घर की चार दीवारी में रहने के लिये आवश्यक संयम का महत्त्व सीखा जिसका लाभ अनेक लोग अब उठा रहे हैं अर्थात् खासकर वे, जिनके बच्चे उनसे दूर रहते हैं।
3. बीते सालों में हमने हर तरह की समस्या से संघर्ष करना भी सीखा है।
4. इसी तरह इन सालों में हमने स्वयं का काम स्वयं करना चाहिये, के महत्त्व को समझा।
5. सच में देखा जाए तो देश में हमारे आस-पास स्वच्छता-सफाई, जिसका सरकार पीछे कई वर्षों से अभियान चलाये हुए थी उसका सही अर्थों में महत्त्व इन बीते सालों में हमें बखूबी समझ में आ गया।
6. आजकल समय बैंक का चलन है। उसकी उपयोगिता समझ, उसमें अनेक लोगों ने इन दिनों में अपनी-अपनी सहभागिता सुनिश्चित की है।
7. हालाँकि एक दूसरे की मदद करना हमें बचपन से सिखाया जाता रहा है, लेकिन इसका महत्त्व भी बहुत ही बढ़िया ढंग से हमें इन बीते सालों में सीखने को मिला है।
8. मानसिक संतुलन की आवश्यकता क्यों और इसे कैसे बनाये रखना है इसको भी हमने अच्छी तरह से सीखा है।
9. अन्न की कीमत क्या होती है इसका अनुभव भी हर स्तर के लोगों ने इन बीते सालों में न केवल देखा बल्कि समझा भी है।
10. वैसे तो हम सभी जानते ही हैं कि सावधानी रखना कितनी जरूरी है लेकिन ''सावधानी हटी और दुर्घटना घटी'' का महत्त्व इन बीतें सालों में बखूबी मालूम पड़ा है।
11. इन्हीं सालों में हमने यह भी सीखा है कि घर के काम में सभी हाथ बंटाते हैं तो कितनी आसानी से सारे गृहकार्य निपट जाते हैं यानी बीते तीन साल घर के काम में हाथ बंटाना भी सीखा गये।
12. प्रकृति को सहेजना चाहिये, यह तो सभी जानते हैं लेकिन उसके प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव भी इन्हीं बीते सालों में हुआ है।
13. बीते सालों में अमीरी-गरीबी का भेद जिस तरह से मिटा है यानी प्रकृति ने किसी से भेदभाव नहीं किया, वह भी एक अलग तरह का अनुभव रहा है।
14. बीते सालों में हमने यह भी अनुभव किया कि सीमित लोगों के साथ कम खर्च में शादी सम्पन्न

की जा सकती है अर्थात् मितव्ययिता का महत्त्व भी समझने में आया।

15. इसी तरह बीते सालों में हमने यह जान लिया कि कम लोगों की उपस्थिति में भी अन्तिम संस्कार करना उचित रहता है।
16. किसी भी बीमारी से पार पाने में मानसिकता का अलग महत्त्व है। यही बात यानी आने वाली किसी भी तरह की विपदा को मजबूती से निपटाने की मानसिक तैयारी कैसी हो यही हमें बीते सालों में सीखने को मिला है।
17. हम सभी प्राय: नित्य ही अपने-अपने पूजा स्थल जाते ही रहे हैं। लेकिन किसी कारणवश नहीं जा पाने पर जो मन में ग्लानि वाला भाव हो जाता उस पर, सर्वशक्तिमान प्रभु ने, पार पाना सीखा दिया अर्थात् उस परिस्थिति में घर पर ही दर्शन, अर्चना वाला महत्त्व कम नहीं है, समझा दिया।
18. जो लोग समय अभाव के कारण हो या अन्य कारणवश पूजा-अर्चना को महत्त्व नहीं देते थे, उन्हें आध्यात्मिक चिंतन महत्त्वपूर्ण क्यों, इन्हीं बीते सालों में सीखने को मिला।
19. कृपया ध्यान दें ये बीते तीन साल जीवन का सही मूल्य समझा कर विदा हुए हैं।
20. इन्हीं बीते सालों में हमको ऑनलाइन पढ़ाई का महत्त्व अच्छी तरह समझ में आ गया अर्थात् समय, मेहनत व पैसा सभी में किफायत जानने को मिली।
21. हम डिजिटल युग में रह रहे हैं लेकिन सदुपयोग कर हम क्या-क्या लाभ उठा सकते हैं, इस विषय को कोरोना काल वाले समय से अभी तक निरंतर विस्तार से समझाया जा रहा है। यही कारण है कि लोगों का रुझान डिटिजल सदुपयोग की तरफ बढ़ता ही जा रहा है।
22. समयाभाव के चलते या किसी भी कारण से जो लोग व्यायाम/योगाभ्यास नियमित नहीं करते थे, उन्हें इसका महत्त्व बीते सालों में समझ में आ गया और कोरोना काल से अब तक हर घर में इस पर अमल हो रहा है।
23. प्राय: आम लोग आयुर्वेदिक दवा को अहमियत नहीं देते थे लेकिन इन बीते सालों में केवल आम लोग ही नहीं बल्कि ऐलोपेथिक डॉक्टर ने भी आयुर्वेदिक दवा के महत्त्व को समझा ही नहीं बल्कि साधारण रोग में लेने की सलाह देना शुरू कर दिया यानी हमारे वैदिक काल वाली दवा कितनी बीते सालों बाद भी कारगर है, यह सभी ने माना।

इसी संदर्भ में आप सभी के ध्यानार्थ बता दूँ कि अभी कुछ दिन पहले ही भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिशा-निर्देश जारी कर लोगों को कम बुखार या वायरल, ब्राँकाइटिस जैसे बीमारियों के लिये एंटीबायोटिक का इस्तेमाल नहीं करने को कहा है। जबकि आयुर्वेद पहले से ही इस तरह की बीमारियों में इसके खिलाफ रहा है।

निष्कर्ष में यही बताना चाहता हूँ कि इन बीते सालों ने हमारी सोच, व्यवहार, चिंतन को एक नयी अनूठी दिशा प्रदान की है। बीते तीन सालों ने हमें न केवल आपसी सहयोग, सद्भावना व स्व अनुशासन का पालन करना सीखाया बल्कि हमें स्पष्ट रूप से समझा दिया कि सही सोच, हिम्मत और धैर्य से हम सभी प्रकार की मुसीबतों से राहत पा सकते हैं। ●

विचार सदैव महत्त्वाकांक्षा का हो, सिद्ध न होने पर भी उसे न त्यागें। – **तिरुवल्लुवर**

# रजपूती जिन्दगी

– गुमानसिंह धमोरा

जगळ डूंगरा हांडियो, पिरजा'न मानी गैर।
अकबर को सामो कर्‌यो, राणै आँख तरेर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

जोहर देख साको करै, पग पग लाशां ढेर।
माई दूध उजाळियो, ईशर राखै खैर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

कांकड़ डोरड़ा खुल्या नहीं, बेरी लीन्या घेर।
खोल गंठजोड़ो झूझियो, हर हर महादेव टेर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

राणी भेजी सैनाणी, जरा'न कीन्ही देर।
मुंड्डी चूड़ावत की हंसै, देख धडूक्यो शेर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

चोरी दावै अदावती, गायां लेग्या घेर।
फेरा छोड़ पाबू झूझ्यो, बैरी'नै कर ढ़ेर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

चौहाण बिन आँख कै, बैरी सूं ले बैर।
बांसा ऊँचो पातस्या, शबद बाण सूं ढेर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

दुरगो घोड़ै पीठ पर, सोयो खांडो लेर।
भूख मिटाई पेट की, बाटी मुसाणा गेर।।
आ रजपूती जिन्दगी, जे जग ल्हादै हेर।।

## सब ओर होता प्रसार

सुवासित वस्तु की खुशबू का प्रसार तो,
एक ओर होता है हवा रुख के अनुसार।
मगर सज्जन की खूबियों का प्रसार तो,
सब ओर होता है बिना किसी सहार।

# अपनी बात

हमारे अवगुणों से हमें मुक्ति पाना है। कैसे पाया जाय? कोई क्रोध से जल रहा है लेकिन आदर्श तो अक्रोध है। तब क्या करना है? क्रोध पर नजर रखें, क्रोध पर ध्यान लाएँ। क्रोध पर नजर गडाना है क्योंकि क्रोधी व्यक्ति का यही तो यथार्थ है। उसी यथार्थ के साथ वह जी रहा है। क्रोध के प्रति यदि वह जागृत रहता है तो धीरे-धीरे क्रोध से मुक्त हो जाएगा। क्रोध से मुक्त होना अर्थात अक्रोध को प्राप्त होना। तथ्य को जानना, तथ्य से मुक्त होने में फलित होता है। भीतर घृणा भरी है और बातें प्रेम की, भाईचारे की, विश्व बन्धुत्व की कर रहे हैं। भीतर घृणा का जहर भरा है। उसी घृणा के जहर को छिपा रहे हैं प्रेम की ओट में। इससे क्या होगा? बाहर प्रेम की बातें होती रहेंगी और भीतर घृणा बढ़ती जाएगी, फैलती जाएगी, कैन्सर की तरह आत्मा को घेर लेगी।

प्रेम की बातें छोड़ो। घृणा यथार्थ है तो घृणा पर ही आँखें गडाई जाए। घृणा का साक्षी बना जाए। घृणा को पहचाने। इसकी पर्त दर पर्त गहराई में उतरें। इसकी सीढियों को पार करें। इस घृणा से परिचित होना ही होगा कि यह घृणा क्यों है? क्या है? कहाँ से आई है? क्यों आती है? इसका राज क्या है? इसका बल कहाँ छिपा है? इसी खोज से हम चकित हो जाएँगे। जिस दिन घृणा के सारे मार्ग जान लेंगे, घृणा के उठने के, जगने के सारे उपाय पहचान लेंगे, जस दिन घृणा का सारा शिकंजा समझ में आ जाएगा, उसी दिन घृणा से बाहर हो जाएँगे। समझ ही मुक्ति है। क्योंकि जिसने घृणा के सब रास्ते जान लिए, वह भूल कर भी घृणा नहीं कर सकता। क्यों? क्योंकि घृणा आत्मघाती है। यह अपने ही जीवन के आनन्द को अपने ही हाथों नष्ट करना है और जो घृणा नहीं कर सकता, उसके भीतर स्वत: ही प्रेम का अविर्भाव होता है।

तथ्यों में जीना है। तथ्य चाहे कितने ही कड़वे क्यों न हो और कितने ही कांटे की तरह क्यों न चुभते हों, जो हमारी असलियत है उससे परिचित होना ही होगा। तब ही क्रान्ति घटती है। तथ्य के परिचय से सत्य का जन्म होता है और जो ऊर्जा क्रोध बनी थी, वही ऊर्जा क्रोध से मुक्त हो जाती है। करुणा बन जाती है। जो ऊर्जा काम वासना बनी थी, वही काम वासना के मुक्त हो जाती है तो राम की खोज बन जाती है। जो काम थी वही राम बन जाती है। जो ऊर्जा घृणा बनी थी, वही घृणा से मुक्त हो जाती है। तब प्रेम की वर्षा होने लगती है।

घृणा और प्रेम एक ही ऊर्जा के दो ढंग हैं। घृणा गलत ढंग है, प्रेम सही ढंग है। लेकिन गलत ढंग को जाने बिना कोई सही ढंग को उपलब्ध नहीं होता। सही ढंग को उपलब्ध होने के लिये करना क्या है? सिर्फ गलत को जान लेना होता है। जिस दिन यह समझ में आ जाये कि सामने यह दीवार है, इससे निकलना सम्भव नहीं है, सिर फूटता है, उसी दिन से दरवाजे की तलाश प्रारम्भ हो जाती है। जहाँ दीवार है, वहाँ दरवाजा भी है। जीवन में ऊर्जा को रूपान्तरित करने की व्यवस्था है। हमारे कंकड़-पत्थर समान जीवन को हीरे जवाहरात जैसा भी बनाया जा सकता है। क्रोध करते हैं तो क्या पीड़ा नहीं होती? क्रोध में जलते-भुनते हैं तो क्या सुख मिलता है? कांटे ही कांटे सीने में चुभ जाते हैं। पश्चाताप भी होता है। क्रोध के बाद हारे-थके अनुभव करते हैं। यह मूढ़ता कब छूटेगी, ऐसा सोच भी उभरता है। स्वयं अपनी नजरों में अपनी ही प्रतिष्ठा गिरती है कि कैसा मूढ हूँ मैं।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर सभी अवगुणों से मुक्ति पाने के लिये उनकी समझ जागृत करना ही उनसे मुक्ति पाने का मार्ग खोलती है। समझ जाग्रत करने के लिये निरन्तर आत्मावलोकन की आवश्यकता है। डायरी लेखन आत्मावलोकन का सशक्त उपाय है।

## हमारे प्रिय स्वयंसेवक साथी सौरभ प्रताप सिंह पुत्र श्री महेन्द्र सिंह गुजरावास के भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट (UPSC CDS) के पद पर चयनित होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

### सौरभ प्रताप सिंह

**शुभेच्छु**

प्रेम सिंह रणधा, चन्द्रवीर सिंह देणोक, भरतपाल सिंह दासपा, हरिसिंह ढेलाणा, भैरूसिंह बेलवा, भवानी सिंह मूंगेरिया, सुमेरसिंह चोरड़ीया, अमरसिंह गोपालसर, चैनसिंह साथीन, भवानी सिंह पीलवा, सोहन सिंह कालेवा, नरपत सिंह बस्तवा, रूपसिंह परेऊ, पदमसिंह ओसिया, लूणकरण सिंह तेना, जसवंत सिंह चाबा, समुन्द्रसिंह आचीणा, प्रेमसिंह परेऊ, बाबुसिंह बापिणी, जसवंत सिंह जैतसर, दीपसिंह टालनपुर, पाबुसिंह लवारन, शिवसिंह बडला, रघुवीर सिंह खिरजा 1st, देवेन्द्र सिंह सहनाली, सुरेन्द्र सिंह रुद, मदनसिंह आसकन्दरा, नाथुसिंह बालेसर सता, रावल सिंह खानोड़ी, गुलाब सिंह बस्तवा, उत्तमसिंह नाहर सिंह नगर, अचलसिंह खियासरिया, शंकरसिंह डेरिया, भोमसिंह लवारन, नरेन्द्र पाल सिंह खिरजा, नरपत सिंह रामदेरिया, अर्जुनसिंह जिनजिनयाला, लक्ष्मण सिंह गुड़ानाल, गोपाल सिंह ताम्बड़ीया

श्री Harii Infra Projects Pvt. Ltd.

की ओर से

# श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी

## की 99वीं जयन्ती पर हार्दिक शुभकामनाएं।

फरवरी, सन् 2023
वर्ष : 60, अंक : 02

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

# संघशक्ति

श्रीमान्.......................................................

..................................................................

..................................................................

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह